Chap-5

: अध्याय -- पाँच :

: आलोच्य उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियां और उनके जीवन की प्रमुख समस्याएं :

: अध्याय : पांच :

: आलोच्य उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियां और उनके जीवन की प्रमुख समस्याएं :

प्रास्ताविक :

पूर्ववर्ती अध्यायों में, प्रथम और द्वितीय अध्याय के अंतर्गत, हम शास्त्रीय दृष्टि से, वेश्याओं की विभिन्न कोटियों वा प्रकारों तथा उनकी कुछेक समस्याओं पर प्रकारान्तर से विचार कर चुके हैं; किन्तु अब हम तृतीय और चतुर्थ अध्याय में समेकित उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की कोटियों और उनकी समस्याओं पर विचार करने का यहां उपक्रम रखते हैं। तृतीय अध्याय में हम लगभग सत्रह उपन्यासों पर विचार कर चुके हैं और चतुर्थ अध्याय में लगभग उन्नीस उपन्यासों पर विस्तारपूर्वक और विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त चतुर्थ अध्याय में

अन्य उपन्यास शीर्षक के अंतर्गत और भी पचीस-तीस उपन्यासों पर विहंगम दृष्टि से विचार किया गया है । ये सभी उपन्यास ऐसे हैं जिनमें किसी-न-किसी रूप में वेश्या-समस्या पर या वेश्याओं के जीवन पर विचार हुआ है । उपन्यासों की चर्चा करते समय भी अनेक उपन्यासों की प्रकारान्तर से चर्चा हुई है जिनमें इस विषय का जरा-तरा भी स्पर्शनि का यत्न हुआ है । प्रस्तुत अध्याय में इन सब उपन्यासों को आधार बनाकर उनकी विभिन्न कोटियाँ तथा उनकी समस्याओं पर विचार किया जायेगा । प्रस्तुत अध्याय को हम दो खण्डों में विभक्त करेंगे -- (क) वेश्याओं की विभिन्न कोटियां या प्रकार और (ख) वेश्या-जीवन की प्रमुख समस्याएं ।

(क) वेश्याओं की विभिन्न कोटियां या प्रकार :

यहाँ पुनः एक बार हम स्पष्ट कर दें कि यह वर्गीकरण पूर्णतया उन उपन्यासों के विश्लेषण पर आधारित है जिनकी चर्चा या उल्लेख पूर्ववर्ती अध्यायों में किया जा चुका है । वेश्याओं की विभिन्न कोटियां व प्रकार हम निम्नलिखित आधारों पर कर रहे हैं --(त) शास्त्रीय आधार पर वेश्याओं की कोटियां , (र) परिवेश पर आधारित वेश्याओं की कोटियां , (ग) लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं और (अ) हाई-फाय सोसायटी की वेश्याएं , (प) धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याएं । अब क्रमशः इन पर सोदाहरण चर्चा होगी ।

(त) शास्त्रीय आधार पर वेश्याओं की कोटियां :

यहां हम उन वेश्याओं की चर्चा करेंगे जिनके प्रकारों का निरूपण पूर्ववर्ती पृष्ठों में शास्त्रीय आधार -- समाजशास्त्रीय आधार -- पर किया जा चुका है । एक और बात भी हम यहाँ स्पष्ट करना चाहेंगे कि ये प्रकार कोई "वाटर-टाईप-कम्पार्टमेण्ट "

नहीं है कि एक कोटि या प्रकार एक स्थान पर आ गया तो दूसरे स्थान पर नहीं आ सकता । कई-कई वेश्याएं कई-कई प्रकार या कोटियों में विचरण कर सकती हैं । शास्त्रीय आधार पर जो कोटियां निर्धारित हुई हैं वे इस प्रकार हैं — /1/ वेश्याओं का प्रकट समूह, /2/ वेश्याओं का अप्रकट समूह, /3/ काल गर्ल्स, /4/ होटल वेश्याएं, /5/ रखैल वेश्याएं, /6/ वंशानुगत वेश्याएं, /7/ वासना पीड़ित वेश्याएं, /8/ परिस्थितिजन्य वेश्याएं, /9/ अपराधी एवं पिछड़ी, विचरणशील व जनजातियों की वेश्याएं, /10/ धार्मिक वेश्याएं, /11/ पुरुष वेश्याएं, /12/बार-गर्ल्स वेश्याएं, /13/ मसाज वेश्याएं, /14/ प्रच्छन्न वेश्याएं, /15/ गौनहारिन वेश्याएं आदि-आदि ।

/1/ वेश्याओं का प्रकट समूह :

जैसा कि उसके नाम से ही स्पष्ट है, इसमें नगरों और महानगरों के लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं तथा नेशनल हाई वे पर ड्राइवरों के विश्रामस्थानों, ढाबों के आसपास की झोंपड़पट्टियों की वेश्याएं समाविष्ट होती हैं । सब जानते हैं कि वे वेश्याएं हैं । बल्कि वे तो अपने व्यवसाय की जानकारी अधिक से अधिक लोगों को हो ऐसा चाहेंगी । तभी तो ग्राहक उसके पास आयेंगे । आलोच्य उपन्यासों में "अंधेरी गली का मकान", "सेवासदन", "जनानी सवारियां", "बलात्कार की आवाजें", "घृणामयी", "गबन", "नदी फिर बह चली", "आगामी अतीत", "बोरीवली से बोरीबन्दर तक", "मुरदाघर", सलाम आखिरी" आदि उपन्यासों में हमें कई वेश्याएं मिलती हैं जिनको हम इस कोटि में रख सकते हैं । "सेवासदन" में बनारस की भोली नामक वेश्या के कोठे को बताया गया है । "नदी फिर बह चली" में पटना की ऐसी सस्ती वेश्याओं का चित्रण हुआ है । "आगामी अतीत" में कार्सियांग का वेश्यालय है । "बोरीवली से बोरीबन्दर तक"

तथा "मुरदाघर" में हमें मुंबई के लालबत्ती विस्तार तथा झोंपड़पट्टियों की वेश्याओं का चित्रण मिलता है । "सलाम आखिरी" में कलकत्ता महानगर के सोनागाछी, बहूबाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर आदि लालबत्ती विस्तारों की वेश्याओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा हुई है । इस उपन्यास में लेखिका ने नीदरलैण्ड के सुप्रसिद्ध लालबत्ती विस्तार एम्सटर्डम का भी वर्णन किया है । [1] मुंबई के लालबत्ती विस्तारों मैकफर्लैण्डरोड, गोलपीठा, कमाठीपुरा, त्रिभुवनरोड आदि पर यह उर्वशी-कार्य संपन्न होता है । "मुरदाघर" में माहिम की झोंपड़पट्टी की मैना, बशीरन, पार्वती, मरियम, रोजी जैसी वेश्याओं का चित्रण मिलता है । मुंबई की सबसे बड़ी झोंपड़पट्टी धारावी की है, वहां भी इस प्रकार की वेश्याएं मिल जाती हैं । "सलाम आखिरी" उपन्यास की इन्द्राणी दी इन वेश्याओं के कल्याण हेतु "संलाप" नामक संस्था चलाती है । इसकी प्रेरणा उनको एम्सटर्डम से मिली थी । यहीं पर उनको ज्ञात होता है कि इन विस्तारों को लालबत्ती इलाका क्यों कहा जाता है । "कांच के बने छोटे-छोटे कमरों की खिड़कियों पर सिर्फ दो कपड़ों में खड़ी वेश्याएं । ग्राहक अन्दर तो लालबत्ती जली हुई अन्यथा हरी बत्ती । यह संकेत देती हुई कि वे उपलब्ध हैं ।" [3] इन वेश्याओं की कोठरियां भयंकर रूप से गन्दी होती हैं । वहां ~~xxxx~~ प्रकाश और हवा-उजास की भी कमी होती है । पुराने जमाने में जो कोठेवालियां होती थीं उनकी हवेलियां तो बड़ी शानदार किस्म की होती थीं, परन्तु अब उनका स्थान इन गन्दी कोठरियों ने ले लिया है । कोई सुरुचिपूर्ण व्यक्ति शायद ही वहां एक मिनट के लिए भी ठहर सकता है । किसी जमाने में बड़ौदा का फतेपुरा विस्तार इसके लिए प्रसिद्ध था, परन्तु अब चोरी-छिपे वहां ये सब होता है, अतः वेश्याओं के प्रकट समूह के अंतर्गत उसको नहीं रखा जा सकता ।

/2/ वेश्याओं का अप्रकट समूह :

वेश्याओं की इस कोटि में प्रायः वे वेश्याएं आती हैं जो ग्राम्य विस्तारों में पायी जाती हैं । गरीबी , दरिद्रता , भुखमरी आदि के कारण कुछ स्त्रियां चोरी-छिपे इस प्रकार का व्यवसाय करती हैं । प्रकट वेश्याओं का तो कार्य ही जिस्मफरोशी है , लेकिन इस कोटि में आने" वाली वेश्याएं प्रकटतः दूसरे-दूसरे काम करती हैं , परन्तु साथ ही साथ उनको यह वेश्यागिरी भी करनी पड़ती है । "जल टूटता हुआ " , "सूखता हुआ तालाब " , "आधा गांव " , " मैला आंचल " आदि उपन्यासों में जमींदारों या मालिकों के यहां खेत-मजदूरी या दूसरे प्रकार के काम करने वाली औरतें और जिनको अपने मालिकों की वासना भी बुझानी पड़ती है , ये सब औरतें इस कोटि में आती हैं । रमपिरिया की मां , फुलिया की मां , फुलिया (मैला आंचल) ; सुगनी (अलग अलग वैतरणी) , डलवा (जल टूटता हुआ) , चैनइया (सूखता हुआ तालाब) , प्रीतो (धरती धन न अपना) आदि की गणना हम यहां कर सकते हैं । शहरों में भी अप्रकट प्रकार की वेश्याएं मिलती हैं । "सलाम आखिरी" में ऐसी धनाढ्य औरतों का जिक्र है जो अपनी मौज-मस्ती के लिए या जिन्दगी की बोरियत को दूर करने के लिए हफ्ते-पखवारे किसी होटल की मुलाकात लेती हैं । इन होटलवालों के पास इनके नंबर होते हैं , जरूरत पड़ने पर वे बुला लेते हैं । "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की सेठानी नर्मदा , तथा "नदी फिर बह चली" की वह आफिसर की पत्नी जिसे अपने पति के सामने ही एक बार पेश किया जाता है ।[4] इसके अलावा "रेखा" उपन्यास की रेखा , मिसेज रत्ना चावला आदि भी इस कोटि में आ सकती हैं । हिमांशु जोशी के उपन्यास "छाया मत छूना मन " की वसुधा और कंचन , "पतझर की आवाजें " की उषा , चिड़ियाघर की मिसेज रिज्वी आदि औरतें भी इस कोटि में आती हैं ।

/3/ काल गर्ल्स :
============

वैश्वीकरण और बाजारीकरण के इस युग में अब वेश्यावृत्ति ने भी नये-नये रूप ले लिये हैं । नगरों-महानगरों की तीन तारा या पांच

सितारों होटलों में ग्राहकों को रिझाने के लिए अब उन्हें "काल-गर्ल" सर्व करने की सुविधा भी दी जाती है । हालांकि उसका बिल ग्राहक को चुकाना पड़ता है । कई औद्योगिक प्रतिष्ठानों को अपने काम सरकार से निकलवाने के होते हैं, वे लोग, सरकारी अधिकारियों को खुश करने के लिए उन्हें "काल-गर्ल" प्रदान करते हैं । "हिज हाईनेस" {ऋषभचरण जैन}, "दशार्क" {जैनेन्द्र}, "नदी फिर बह चली" {हिमांशु श्रीवास्तव}, "मछली मरी हुई" {राजकमल चौधरी}, "सलाम आखिरी" {मधु कांकरिया}, "छाया मत छूना मन", "ढहती दीवारें {मीना दास} आदि उपन्यासों में इस प्रकार की काल-गर्ल्स की चर्चा मिलती है ।"काल-गर्ल्स" में प्रतिष्ठित घरानों की सुंदर-सुगठित महिलाएं तथा कालेज की छात्राएं भी होती हैं । आजकल "ड्रग्ज" आदि का सेवन भी कई लड़कियां कुसंगति में पड़कर करने लगी हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए उनको अपना शरीर बेचना पड़ता है ।

/५/ होटल वेश्याएं :

होटल में जाकर जो वेश्यावृत्ति करती हैं उनको "होटल वेश्याएं" कहा जाता है । ऊपर जिन प्रतिष्ठित घरानों की स्त्रियों का उल्लेख किया है, वे भी इस कोटि में समाविष्ट हो जाती हैं । इनके अतिरिक्त "होटल वेश्याएं" उनको कहते हैं, जो लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं से अधिक महंगी होती हैं और अपने ग्राहकों के साथ होटलों में जाती हैं । लालबत्ती विस्तार के कमरे और कोठरियां निहायत गन्दे और घिनौने होते हैं, अतः कुछ पैसेवाले संपन्न ग्राहक वहां से वेश्याओं को पसंद करके अपने खर्चे से होटलों में ले जाते हैं । "आगामी अतीत" का कमल बोस चांदनी को ऐसे ही किसी महंगे होटल में ले जाता है । ऐसे में कोठेवाली मालकिन को पहले "कन्विंस" करना पड़ता है । उसकी परमिशन मिलने पर

ही ग्राहक वेश्या को होटल में ले जा सकता है। मधु कांकरिया के उपन्यास " सलाम आखिरी " में अनेक वेश्याओं ने अपने धनी-मानी ग्राहकों के इस प्रकार के अनुभव वर्णित किए हैं। "नदी फिर बह चली", "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई ", " छाया मत छूना मन", "मछली मरी हुई ", "रेखा" आदि उपन्यासों में इस प्रकार की वेश्याओं का चित्रण मिलता है। इसमें ग्राहक अपनी पसंदीदा वेश्या को होटल में ले जाते हैं, पर कई बार इससे विपरीत भी होता है। सुसम्पन× संपन्न कुलीन परिवार की महिलाएं भी कई बार अपने ग्राहकों को [अर्थात पुरुष वेश्याओं को] ऐसे महंगे होटलों में ले जाती हैं। "रेखा" की रेखा और "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदा इसके उदाहरण हैं।

/5/ रखैल वेश्याएं :

बड़े लोग — रईसजादे, जमींदार, सामंत, राजे-महाराजे, बड़े-बड़े उद्योगपति — आदि का एक शौक है। पत्नियों और उप-पत्नियों के अतिरिक्त रखैल भी रखते हैं। "रखैल" शब्द से ही यह ध्वनित होता है कि जिसको रख लिया गया है। संस्कृत शब्द "रक्षिता " का यह बिगड़ा हुआ रूप है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में ओरछा-नरेश इन्द्र× के दरबार की नृत्यांगना प्रवीणराय का उल्लेख मिलता है जो अच्छी कवयित्री भी थी और रीतिकाल के कवि केशवदास की शिष्या थी। वह ओरछा-नरेश की रखैल थी। इसी प्रकार कच्छ के महाराव लखपतसिंह की भी कई रखैलें थीं। ऐसा कहा जाता है कि महाराव लखपतसिंह की मृत्यु पर उनकी ये रखैलें ही सती हुई थीं।[5] डा. नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यास "अवसर" में भी अयोध्या-नरेश राजा दशरथ की अनेक रक्षिताओं का वर्णन हुआ है। उनमें से से तो कई ऐसी थीं जिनके साथ दशरथ केवल एक ही रात सोये हैं।[6] लखनऊ के नवाब वाजिदअली शाह के हरम में भी सैकड़ों रखैलों का उल्लेख मिलता है। कई बार देखा जाता है कि ये तथाकथित रखैलें ब्याहता पत्नियों से भी अधिक वफादार साबित

होती हैं । ये अपने मालिक के लिए "एफ.एफ.जी" होती हैं, अर्थात "फ्रैन्ड, फिलोसोफर एण्ड गाईड" । ऋषभचरण जैन कृत उपन्यास ("चम्पाकली" की चम्पाकली नामक रखैल वेश्या इसका ज्वलंत उदाहरण है । वेश्या या रण्डी होते हुए भी वह अपने मालिक रामदयाल को जी-जान से चाहती है । रामदयाल की मृत्यु के बाद दिल्ली की गलियों में भीख मांगना उसे कबूल है, पर रामदयाल के भाई की रखैल बनना उसे मंजूर नहीं है । [67] "छाया मत छूना मन" की वसुधा, "नावें" (शशिप्रभा शास्त्री) की मालती, "मुक्तिबोध" की नीलिमा, "रामकली" की रामकली, "अल्मा कबूतरी" की अल्मा आदि भी इसके उदाहरण हैं । "इमरतिया" की लक्ष्मी को भी हम इस कोटि में रख सकते हैं । आजकल राजनीति में इस प्रकार की रखैलें रखने का फैशन-सा चल पड़ा है । कुछ दिन पूर्व भाजपा के कल्याणसिंह, राजनाथसिंह और कलराज मिश्रा के इस प्रकार की प्रवृत्तियों का विस्तृत हैवाल गुजराती दैनिक "गुजरात समाचार" में प्रकाशित हुआ था । राजनीति की भाषा में ऐसी स्त्रियों को "बहनजी" कहा जाता है । कुछ लोग व्यंग्यात्मक भाषा में इसे "स्पेर-व्हिल" भी कहते हैं । ठीक इसके विपरीत "पुरुष-रखैल" भी होते हैं । "सलाम आखिरी" की कोठा-मालकिन मीना ने एक ऐसा "रखैल" अपने लिए रख लिया है । वेश्याओं की भाषा में उन्हें "बाबू" कहा जाता है । [8]

/6/ वंशानुगत वेश्याएं :
=================

कुछ वेश्याएं ऐसी होती हैं जिनको "वेश्यावृत्ति" वंश-परंपरा में मिलती है । किन्तु यहां ध्यान रहे वेश्याओं का वंश पिताओं से नहीं माताओं से चलता है । लालबत्ती विस्तार की कई वेश्याएं इस प्रकार की होती हैं । यद्यपि कोई भी वेश्या मां अपनी पुत्री को वेश्या बनाना नहीं चाहती है । पर अनिच्छित परिस्थितियां ऐसी बन जाती हैं कि मजबूरन उन्हें अपनी लाड़लियों को इस अमानवीय

पेशे में झोंकना पड़ता है । "सलाम आखिरी" की माया देवनार ने तो अपनी बेटी को गांव में रखा था । उसने गांव में यही कह रखा था कि वह कलकत्ते में नौकरी करती है, हालांकि वह कलकत्ता के कालीघाट विस्तार में चकला चलाती थी और बड़ी जालिम किस्म की "कुटनी" थी । एकबार कुतूहलवश माया देवनार की पुत्री पता पूछते-पूछते माया के कोठे पर पहुंच जाती है । उसका नाम विशाखा था । माया उसे पढ़ा-लिखाकर एक अच्छी गृहिणी बनाना चाहती थी । पर उसका स्वप्न पूरा नहीं होता । विशाखा तो अपनी मां के कमरे में निश्चिंत सोयी थी कि कुछ वेश्याओं ने ईर्ष्यावश माया के एक चहेते पुराने ग्राहक को यह कहकर भेज दिया कि माया के कमरे में एक नया पंछी है । मां का कारोबार अब बेटी संभाल रही है । साथ ही उन्होंने यह भी ताकीद कर दी थी कि " पर जरा संभाल के, बड़ी नखराली है, जिस-तिस को घास नहीं डालती, खालिस लौटा भी देती है । अभी एकदम नई-नई है न, पर यदि तुम असल बापका होगा तो मर्दानगी xxxx दिखाकर ही लौटना ।"[9] और वह खूसट मर्दानगी दिखाकर ही लौटा । विशाखा पर वह "रेप" करता है । कितनी बड़ी विडम्बना है कि जिस माया देवनार ने अनेक "छुकरियों" को, बारह-बारह तेरह-तेरह साल की कच्ची उम्र की लड़कियों की योनि में कागज के "शोले" डालकर तथा पानी के टब में बिठाकर वेश्या बनाया था, उसकी ही लड़की विशाखा को उसके ही चहेते ग्राहक ने बलात्कार करके वेश्या बना दिया था । माया उस समय अस्पताल गई थी । वह एच.आई.वी. पोजीटिव थी । हालांकि माया उस बूढ़े खूसट को गण्डासा मारकर उसकी हत्या कर देती है, पxx और जेल चली जाती है, पर उसकी बेटी xxxxxxxxxxxxxxxxxxxx विशाखा को तो अपनी मां का कारोबार मजबूरन चलाना पड़ता है । यदि माया क्षणिक आवेश में ऐसा न करती, समझा-बुझाकर विशाखा को पुनः गांव भेज देती तो शायद नतीजा दूसरे प्रकार का होता । इसी तरह इसी उपन्यास की पिन्की भी एक वंशपरंपरागत वेश्या है । ऊंट-वैद से गर्भपात कराने

के कारण पिन्की की अकस्मात अकाल मौत होती है, फलतः उसकी बेटी मलका को धन्धे पर बैठना पड़ता है। पिन्की मरते समय बहुत दर्द के साथ कहती है —" मैं वेश्या, मेरी मां वेश्या, बहन वेश्या और अब यह पुत्री भी इस दुनिया में।" [10] इनके अतिरिक्त वंशानुगत वेश्यावृत्ति अप्रकट समूह की जनजातियों की औरतों में भी पायी जाती है। "कब तक पुकारूं" उपन्यास में प्यारी की मां प्यारी को दरोगा के पास जाने के लिए कहती है। प्यारी को वह समझाती है कि यही तो औरत का काम है। औरत का काम औरत नहीं करेगी तो फिर कौन करेगा। "अल्मा कबूतरी" में कबूतरा जातियों के संदर्भ में बताया गया है। अल्मा की मां इस प्रकार की वेश्यावृत्ति करती थी। उसकी नानी-दादी आदि सभी औरतें ये काम कर चुकी है और अन्ततः अल्मा को भी राजनीतिक उन्नति के लिए वही रास्ता अख्तयार करना पड़ता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन कहता है " वंशानुगत वेश्यावृत्ति मुगलकाल की देन है। इस प्रकार की वेश्याएं मां से पुत्री को अपना "धंधा" हस्तांतरित करती है। जब वे पहली बार अपनी लड़की को इस व्यवसाय में प्रवेश कराती हैं तो एक समारोह का आयोजन किया जाता है जिसे नथ उतारने का उत्सव कहते हैं।" [11] हालांकि यह पुराने समय की बात हैं। अब लालबत्ती विस्तारों में यह शब्द तो चलता है, पर ऐसे कोई समारोह नहीं होते। हां, नयी बच्ची के नाम पर, यह कहते हुए कि उसकी तो नथ भी अभी नहीं उतारी गई है, ग्राहक से अधिक पैसे मांगे जाते हैं। "सलाम आखिरी" में जो लड़कियां मां से यह "धन्धा" अपनाती हैं, वहां इस प्रकार का कोई समारोह नहीं होता है।

/7/ वासना-पीड़ित वेश्याएं :

पूर्ववर्ती पृष्ठों में अनेक स्थानों पर निर्दिष्ट किया गया है कि कई कारणों से कुछ स्त्रियां "विपुलवासनावती" हो जाती हैं। अंग्रेजी में ऐसी स्त्रियों को "निम्फो" कहा जाता है। किसी भी स्त्री के "निम्फो" हो जाने के कारणों में उसकी अतृप्त काम-वासना मुख्य होती

है । अनमेल-विवाह , पति की अक्षमता या नपुंसकता आदि के कारण जब किसी स्त्री की काम-वासना को योग्य मार्ग नहीं मिलता है , तब वह दूसरे पुरुषों की टोह में निकल पड़ती है और उसके कारण उसकी काम-वासना अनेक गुना बढ़ जाती है । जिस प्रकार भूखा आदमी खाने पर टूट पड़ता है , उसी प्रकार ऐसी स्त्रियां पुरुषों पर टूट पड़ती हैं । जैसे भुखमरी में जीने वाला व्यक्ति कभी "अन्नमय कोश" से आगे नहीं बढ़ सकता , ठीक उसी तरह ऐसी स्त्रियां भी निरंतर काम-वासना से पीड़ित रहती हैं । उनके लिए प्रेम का मतलब ही "सेक्स" होता है । "रेखा" उपन्यास की रेखा , "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई" की नर्मदा , "जल टूटता हुआ" की डलवा , "मैला आंचल" की फुलिया की माँ , "सलाम आखिरी" की माया देवनार , "इसरतिया" की गौरी , "कबूतरखाना" की भुलेश्वर की सेठानियां आदि इसके उदाहरण हैं । "मित्रो मरजानी" की मित्रो भी इनमें आ सकती हैं । निरंतर वासना-पीड़ित रहने के कारण कई बार उनकी भाषा में भी "रफनेस" आ जाती है । मित्रो एक स्थान पर अपनी सास से कहती है — "मेरा बस चले तो गिनकर सौ कौरव जन डालूं , पर अम्मा अपने लाड़ले बेटे का भी तो आड़तोड़ जुटाओ । निगोड़े मेरे पत्थर के बुत में भी कोई हरकत तो हो ।" ।2

/8/ परिस्थितिजन्य वेश्याएं :

कोई भी स्त्री जन्मना वेश्या नहीं होती । उसे वेश्या बनना पड़ता है । हमारा समाज उसे वेश्या बनाता है । यह कैसी विडम्बना या "हिपोक्रसी" है कि हमारा समाज , समाज और धर्म के ठेकेदार रात-दिन वेश्या की बुराई करते हैं , उससे घृणा करते हैं और फिर वे ही इन वेश्याओं का निर्माण करते हैं । डा. विद्याधर अग्निहोत्री अपने अध्ययन में निरूपित करते हैं — " 65.6 प्रतिशत वेश्याएं आर्थिक कारणों से इस पेशे में आई हैं , 28.8 प्रतिशत सामाजिक कुप्रथाओं से त्रस्त होकर और केवल 5.6 प्रतिशत

मनोवैज्ञानिक और अन्य कारणों से इस पेशे में आई है ।" [13] प्रेमचंद कृत "सेवासदन" तथा ऋषभचरण जैन कृत " जनानी सवारियां " में कोई भी स्त्री वेश्याजीवन की ओर क्यों आती है उनके कारणों का बड़ा ही अच्छा विश्लेषण किया गया है । ग्रामीण विस्तारों में जो अप्रकट समूह की वेश्यावृत्ति चलती है , वहां भी वे स्त्रियां अपने मन से ऐसा नहीं करती हैं । अपनी आर्थिक विवशताओं के चलते उनको ऐसा करना पड़ता है । विचरणशील जनजातियों की स्त्रियों में जो वेश्यावृत्ति चलती है , वहां भी उनकी परिस्थितियां उनसे वैसा करवाती हैं । "कब तक पुकारूं " की प्यारी अपने पति को खूब चाहती है और वह दरोगा के पास नहीं जाना चाहती थी , पर तब उसकी मां उसे कहती है कि यदि वह दरोगा के पास नहीं गई तो वह उसके बाप तथा आदमी को पकड़कर ले जाएगा और मार-मारकर उनका भुर्ता बना देगा । और जब "कमेरा" नहीं रहेगी तो क्या उसे यह सब नहीं करना पड़ेगा ? मतलब कि राजी-राजी गैरराजी यह काम करना ही पड़ता है । इसे "अल्मा कबूतरी" में भी बताया गया है । "सूखता हुआ तालाब " की चैनइया को भी बेमन से यह काम करना पड़ता है । "धरती धन न अपना " , " अलग अलग वैतरणी " , "जल टूटता हुआ " इन सभी उपन्यासों में हमें यह बात उपलब्ध होती है । यह बात तो हुई वेश्याओं के xxxx अप्रकट समूह की , लेकिन जो प्रकट समूह की वेश्याएं हैं , जो लालबत्ती विस्तारों में हैं या फुटपाथों , पाईपों या झोंपड़पट्टी में रहती हैं , उनमें भी अधिकांश वेश्याएं परिस्थितियों में पड़कर ही इस व्यवसाय को अपनाने के लिए मजबूर हुई हैं । "मुरदाघर" की मैना प्रेम-वंचना का शिकार होकर आई है । इसी उपन्यास में गुजरात के काठियावाड़ से किसी लड़की को भगाकर लाने की और फिर उसे वेश्यावृत्ति के लिए विवश किए जाने की बात आती है । [14] मधु कांकरिया के उपन्यास "सलाम आखिरी" की मीना , नलिनी , रमा , नूरी , गायत्री , चन्द्रिका आदि सभी वेश्याएं जबरदस्ती बनायी

गयी हैं और किसी-न-किसी प्रकार की सामाजिक-पारिवारिक परिस्थिति के तहत वे वेश्याकर्म के लिए मजबूर हैं । [15] "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " की नूर भी परिस्थितियों के भँवर में पड़कर वेश्या बनती है । वस्तुतः वह नैनिताल की है । उसका मूल नाम तो रेवा होता है और वह हिन्दू है , किन्तु अपने प्रेमी के झांसे में वह उसके साथ भागकर मुंबई आती है और वह हरामी उसे मुंगरापाड़ा में किसी बाई के हाथों बेच देता है । [16] रामकुमार भ्रमर कृत "कांचघर" में जो संघ की बाइयां है माला , रत्ना , कावेरीबाई आदि को भी मजबूरन वेश्यावृत्ति करनी पड़ती है । हालांकि वे अप्रकट समूह की वेश्याएं हैं । गांव-खेड़े के मुकुन्दराव और शंकरराव बेलापरकर जैसे स्थानीय नेताओं से लेकर पुलिस कमिश्नर तक को उन्हें खुश करना पड़ता है , अन्यथा "म्याद-खत्मी" का नोटिस पकड़वा दिया जाता है । [17] बहरहाल संक्षेप में यही कहा जाता है कि 90 प्रतिशत से ज्यादा स्त्रियां मजबूरी में ही वेश्या का धंधा करती है ।

/9/ अपराधी एवं पिछड़ी , विचरणशील व जनजातियों की वेश्याएं :

कुछ जातियों को अपराधी ही करार दिया जाता है । ब्रिटिश सरकार के समय से पुलिस-रिकार्ड में उनको अपराधी के रूप में घोषित किया गया है । अतः कई बार जब गांव-खेड़ों में कहीं भी चोरी होती है , इन जातियों के मर्दों को धर-दबोच लिया जाता है और भी जबरदस्ती उनसे अपराध कबूलवाया जाता है । नट , करनट , बेड़िया , कंजर , सांसी , करनट , कबूतरा आदि ऐसी जातियां हैं । गुजरात के पंचमहाल व दाहोद जिले की कई आदिवासी जातियों का भी इसमें शुमार है । ऐसी जातियों में नायका , वाघरी , कोळी आदि हैं । इनके पुरुषों पर हमेशा एक लटकती तलवार रहती है । अतः स्त्रियों को जबरन पुलिस के अधिकारियों को — दरोगा , इन्सपेक्टर आदि — को खुश करना पड़ता है ।

आलोच्य उपन्यासों में "कब तक पुकारूं " [डा. रांगेय राघव], "काँचघर" [डा. रामकुमार भ्रमर] तथा "अल्मा कबूतरी " आदि में हम इस प्रकार की वेश्याओं को देख सकते हैं ।

/10/ धार्मिक वेश्याएं :

"धार्मिक वेश्याएं" ये शब्द सुनने में बड़े विचित्र लगते हैं, पर यह हमारे समाज की एक कड़वी सच्चाई है । हमारे यहाँ धर्म के नाम पर कई बार ऐसी प्रवृत्तियाँ चलती हैं जिनका यदि पर्दाफाश किया जाए तो इज्जतदार व्यक्ति का सिर शर्म से झुक जाए । प्राचीन काल से हमारे यहाँ "देवदासी-प्रथा " चलती है । दक्षिण के कई मंदिरों में देवदासियां पाई जाती हैं । अभी कुछ वर्ष पहले तक जगन्नाथ के मंदिर में [पुरी] देवदासी-प्रथा प्रचलित थी । प्रकटतः ये देवदासियां मंदिर में नृत्य-गायन आदि करती हैं, किन्तु अप्रकट रूप से उन्हें मंदिर से जुड़े तमाम सत्ताधारी और संपन्न लोगों को खुश करना पड़ता है और यही उनका मुख्य काम है । समारोहपूर्वक लड़कियों को देवदासी बनाया जाता है । उसमें ज्यादातर गरीब-माँबाप की सुन्दर लड़कियां होती हैं । एक बड़ा पाखण्ड-तंत्र इसमें शामिल है । मंदिर के साधु महात्मा और पुजारी भी इन देवदासियों का भोग करते हैं । किशोरीलाल गोस्वामी कृत " स्वर्गीय कुसुम " की कुसुम एक देवदासी है । तृतीय अध्याय के अन्तर्गत उसकी विस्तृत चर्चा की गई है । नरसिंहराव शुक्ल द्वारा प्रणीत उपन्यास "देवदासी" देवदासी वेश्याओं पर ही लिखा गया आत्मकथात्मक शैली का उपन्यास है । इस उपन्यास के संदर्भ में डा. एन.एस. परमार लिखते हैं : " प्रस्तुत उपन्यास में दक्षिण भारत की नीलपट्टम नगरी को लिया गया है । इस नगर में भगवान सुब्रह्मण्यम का एक सुन्दर मंदिर है । इस मंदिर में देवदासी के रूप में अनेक दलित किशोरियां, बालाएं, युवतियां या प्रौढ़ाएं रहती हैं । वस्तुतः यह मंदिर व्यभिचार का अड्डा है । मंदिर के महन्त और पुजारी, मंदिर के अन्य सेवक, उनके चेले-

चपाटी, मंदिर से जुड़े उच्चवर्गीय लोग, अधिकारीगण तथा संपन्न यात्रीगण इन देवदासियों के साथ मनचाहा व्यभिचार करते हैं। स्थिति की करुणता तो यह है कि यह सब कार्य धर्म के नाम पर चलते हैं।[18]

रेणु के "मैला आंचल" में भी ऐसे एक धार्मिक मठ की बात आती है। मठ की सधुआइन लछमी के पीछे सभी पड़े हुए हैं — महन्त सेवादास, रामदास, नंगा बाबा आदि-आदि। नागार्जुन के "इमरतिया उपन्यास में तो xxxx इस धार्मिक वेश्यावृत्ति का ऐसा पर्दाफाश हुआ है कि ऐसे लोगों की चिन्दी-चिन्दी उड़ गयी है। इस उपन्यास के "जमनियामठ" में कई सारी सधुआइनें हैं — गौरी, लक्ष्मी, माई इमरतीदास। इन सधुआइनों का काम बिलकुल देवदासियों जैसा ही है। अंतर केवल इतना है कि वहां देवदासियों के संदर्भ में तो सबको ज्ञात होता है कि ये एक तरह की वेश्याएं ही हैं, जबकि यहां पर ब्रह्मचर्य और पवित्रता के आंचल में ये सब होता है। सधुआइन गौरी साल में चार मर्द बदलती है। मठ का कोई लफड़ा होता है तो गौरी को पुलिस थाने भेज दिया जाता है और दो-चार रात वह वहां रहकर सारा मामला सुलटा देती है। इस मठ में महिलाओं का एक आश्रम चल रहा है। उसमें ऐसी औरतें आती हैं जिनके संतान नहीं होती हैं। प्रकट रूप से तो ऐसा कहा जाता है कि बाबा की चमत्कारिक सोटी के प्रभाव से उन स्त्रियों की कोख फलवती होती हैं, परन्तु वास्तविक कमाल सोटी का नहीं, बल्कि मठ से जुड़े तमाम बड़े-बड़े लोगों का होता है।[19] "एक मुठ सरसों" (मटियानी) की रेवती एक दुःख की मारी औरत है। एक दिन उसकी भेंट जागेश्वर की यात्रा से लौटी हुई जोगमायाओं से हो जाती है। उनमें से एक हैं महेश्वरी माता। वह रेवती को अपनी शरण में ले लेती है और आश्वासन देती है कि वह नाथगिरि बाबा से दीक्षा दिलाकर उसके चोले को पवित्र कर देंगे। नाथगिरि बाबा उसे कैसे "दीक्षा" देते हैं वह लेखक के ही शब्दों में देखिये : "आओ, पापी संसार के कर्महीन संसारियों की तरह लाज-संकोच करना छोड़ो

.... अपने संसारी वस्त्र उतारकर, मेरे पद्मासन में बैठकर लिंगेश्वर महाराज की पूजा करो । तुमको धरम का चोला प्राप्त हो जाएगा और फिर सारे रोग, शोक और भय-व्याधियों से मुक्ति मिल जायेगी ।"[20] कहना न होगा कि बाबा बिलकुल नंग-धड़ंग अवस्था में बैठे हुए थे । रेवती वहाँ से भाग खड़ी होती है । लक्ष्मीनारायण लाल के उपन्यास "प्रेम अपवित्र नदी " में भी इस धार्मिक वेश्यावृत्ति का एक रूप मिलता है । दिल्ले के कपूरथाला परिवार में ऐसी परंपरा है कि विवाह के बाद वधू का पहले भोग लगाना पड़ता है, हरद्वार जाकर, अपने पुश्तैनी पण्डे के यहाँ । ये सब उदाहरण धार्मिक वेश्यावृत्ति के हैं । वस्तुतः हमारे कई तीर्थ-स्थान अनीति और अनाचार के अड्डे बने हुए हैं ।

/11/ पुरुष वेश्याएं :

"धार्मिक वेश्याओं " शीर्षक की भांति यह शीर्षक भी चौंकाने-वाला है । जब भी वेश्या शब्द हमारे कानों में पड़ता है, हमारे सामने किसी स्त्री का ही चेहरा घूम जाता है । व्याकरण की दृष्टि से भी "वेश्या" शब्द स्त्रीलिंगी है । अतः इसके लिए अंग्रेजी शब्द का प्रयोग ठीक रहता है — " मेल प्रोस्टिट्यूट " । जिस प्रकार ~~स्त्रि~~ स्त्री जब पैसे लेकर अपना शरीर बेचती है तो वेश्या कहलाती है, ठीक उसी प्रकार जब पुरुष पैसा लेकर किसी स्त्री के साथ ~~संभोग~~ संभोग करता है तो उसे "पुरुष वेश्या" कहा जाता है । विश्व में तो कई ऐसे बाज़ार हैं जहाँ स्त्रियां पुरुषों की खरीद-फरोख्त करती हैं । हमारे यहाँ ऐसे खुले बाज़ार तो नहीं है, लेकिन पुरुषों से इस प्रकार का कार्य तो प्राचीन समय से लिया जाता रहा है । आलोच्य उपन्यासों में "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " तथा "कबूतरखाना" इन दो उपन्यासों में हमें "पुरुष वेश्याओं " का चित्रण उपलब्ध होता है । ये दोनों उपन्यास मटियानीजी के हैं । मधु कांकरिया" का उपन्यास "सलाम आखिरी" वेश्या-जीवन के लगभग तमाम पक्षों को पाठकों के सम्मुख रखता है, किन्तु वहाँ भी यह पक्ष तो अनाकलित ही रह गया है ।

हालांकि इस शब्द का प्रयोग एक स्थान पर हुआ है, पर संदर्भ वह नहीं है जो इस शब्द से जुड़ा हुआ है।[21] वहां ऐसे एक पुरुष को लेखिका ने पुरुष वेश्या [illegible] कहा है जिसके जीवन में लगभग अड़तालीस औरतें आ चुकी हैं। वहां लेखिका (अर्थात् सुकीर्ति) की टिप्पणी है —" अरे जो पुरुष अड़तालीस स्त्रियों के समक्ष स्वयं को प्रस्तुत कर चुका वह पुरुष रहा ही कहां, वह तो खुद पुरुष-वेश्या बन चुका।"[22] किन्तु हम यहां जिस संदर्भ में "पुरुष-वेश्या" की बात कर रहे हैं उसमें पुरुष वेश्या की भांति जिस्मफरोशी करता है। "कबूतरखाना" की सेठानियां अपने रामाओं से अपनी यौन-क्षुधा तृप्त करती हैं, हालांकि वे बदले में पैसे नहीं देती, पर नौकरी की आर्थिक मजबूरी तो वहां भी है। दूसरे कई सेठानियां इसके बदले में कई बार उनको सिनेमा देखने के और सैर-सपाटे के पैसे भी देती हैं। इधर एक नया "कल्चर" विकसित हो रहा है, जिसे "गे-कल्चर" कह सकते हैं। उसमें पुरुषों के समलैंगिक सम्बन्ध होते हैं। ऐसे सम्बन्धों के लिए कई पैसे वाले लोग तथा धन-सत्ता-संपन्न लोग अपनी यौन-संतुष्टि के लिए पुरुषों को हायर करते हैं या कोई और प्रकार का प्रलोभन देते हैं। इधर की दो फिल्मों में इसको बताया गया है — "पेज थ्री" और " मेट्रो"। मुगलकाल के बाद नवाबों के समय में लखनऊ जैसे शहरों में "लौंडेबाजी" खूब चलती थी। ऐसे लोग हमेशा खूबसूरत या स्त्रैण प्रकार के "लौंडों" की तलाश में रहते हैं। डा. राही मासूम रज़ा के उपन्यास " आधा गांव " तथा " दिल एक सादा कागज " में इस प्रकार की लौंडेबाजी का चित्रण खूब हुआ है। "आधा गांव" के [illegible] कमालुद्दीन को तक्कन मियां गोदाम में जाते हैं। तक्कनमियां के साथ गोदाम जाने का मतलब क्या होता है यह गांव के सब बच्चे जानते हैं, क्योंकि कई बच्चों को तक्कनमियां बहला-फुसलाकर गोदाम ले गए हैं।[23] डा. शिवप्रसादसिंह के उपन्यास "अलग अलग वैतरणी " में हेडमास्टर जवाहरसिंह अपने ही शिष्य से हमबिस्तर होते हैं।[24] उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यास " शहर में घूमता आईना" में बिल्ला, जगना, देबू,

प्यारू जैसे जालन्धर के मशहूर गुण्डे लड़कियों की अपेक्षा सुन्दर नमकीन लड़कों पर अधिक आकर्षित होते हैं ।[25] इस उपन्यास के अमीचंद के मामा सोहनलाल को बुढ़ापे में भी सुन्दर लड़के की आवश्यकता रहती थी जो उनके बिस्तर को गर्म करे । [26]

/12/ बार-गर्ल्स वेश्याएं :

ये वेश्याओं के अप्रकट स्वरूप में आती हैं, क्योंकि प्रकटतया उनका काम बड़े-बड़े शहरों में शराब के जो बार और पब होते हैं उनमें डान्स करना होता है ; परन्तु अप्रकट रूप से उनको वेश्यागिरी भी करनी पड़ती है । ~~§बारे×बार~~ "चांदनी-बार" इस विषय पर बनी एक अच्छी फिल्म थी । आलोच्य उपन्यासोंमें इनका विस्तृत वर्णन तो नहीं मिलता, किन्तु कई उपन्यासों में उसका उल्लेख मिलता है । ऐसे उपन्यासों में "वे दिन" § निर्मल वर्मा §, "मछली मरी हुई " § राजकमल चौधरी §, " सलाम आखिरी" § मधु कांकरिया आदि का उल्लेख कर सकते हैं ।

/13/ मसाज वेश्याएं :

महानगरों में "ब्यूटी-पार्लर " के नाम पर कई बार वेश्यावृत्ति चलती है । सुन्दर लड़कियां पुरुषों के शरीर का मसाज करती हैं और मसाज क्रिया के दरमियान पुरुष इतना उत्तेजित हो जाता है कि वह उस लड़की के साथ फिर यौन-सुख भी लेता है । "सलाम आखिरी" उपन्यास में कलकत्ता के पार्क स्ट्रीट इलाके के एक ऐसे "ब्यूटी पार्लर " का जिक्र है जिसमें "ब्यूटी-पार्लर " के नाम पर वेश्यावृत्ति का काम धड़ल्ले से चलता है । [27]

/14/ प्रच्छन्न वेश्याएं : इसे अप्रकट समूह की वेश्या भी कह सकते हैं । खास करके ग्रामीण क्षेत्रों में कई औरतों को प्रच्छन्न रूप से यह काम करना पड़ता है । शहरी विस्तारों में

भी ऐसी वेश्याएं पायी जाती हैं । वेश्या की जो परिभाषा है, उसके चौखटे में वे बराबर बैठती नहीं है, किन्तु देखा जाए तो वे भी अपने आर्थिक फायदों के लिए किसी भी पुरुष के सामने, विशेषकर अपने बास के सामने बिछ जाती हैं । "चिड़ियाघर" की मिसेज रिज्वी, "पतझर की आवाजें" की उषा, "छायामत छूना" की वसुधा, "डाक बंगला" (कमलेश्वर) की इरा, "मुक्तिबोध" की नीलिमा आदि को हम इस कोटि में रख सकते हैं ।

/15/ गौनहारिन वेश्याएं :

गौनहारिन वेश्या उसको कहते हैं जो नाच'गाना और मुजरा करती है । "उमरावजान अदा" की उमरावजान इस प्रकार की गौनहारिन वेश्या है । मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यास "सेवासदन" में सुमन जो वेश्या बनती है, वह गौनहारिन ही है । गौनहारिन वेश्याओं का काम तो नाच-गाना और मुजरा ही होता है, पर कई बार राजा-महाराजा या नवाब लोग उनको अपनी रखैल भी बना देते थे । ऐसे में उनके यौन-संबंध केवल उनके आश्रयदाता तक सीमित रहते थे । सीधे शब्दों में कहें तो वह "सामान्या" नहीं होती थी । कोई भी व्यक्ति पैसा फेंककर उनसे यौन-संबंध नहीं बना सकता था । "साहिब बीबी गुलाम (विमल मित्र) में भी ऐसी गौनहारिन वेश्याओं का चित्रण मिलता है । किन्तु वक्त बदलने के साथ कई बार ये अपनी वफादारी भी बदल देती थीं, जैसा कि "साहिब बीबी गुलाम" में हुआ है और जिसके कारण खून-खराबा भी होता है । प्रेमचंदपूर्व काल के अनेक उपन्यासों में हमें ऐसी गौनहारिन वेश्याओं का चित्रण मिलता है, किन्तु अब उनके साथ जुड़ी हुई कला धीरे-धीरे समाप्त हो रही है और उसका कार्य अब केवल यौन-कर्म तक सीमित होकर यांत्रिक-सा होता जा रहा है । मधु कांकरिया के उपन्यास "सलाम आखिरी" में इस मुद्दे की भी चर्चा हुई है — " अब न रहे वो

पीने वाले " अध्याय के अन्तर्गत । 28 सिनेमा और टी.वी. के प्रचलन के साथ लोगों का यह शौक दूसरे-दूसरे माध्यमों से पूरा हो रहा है । फलतः गौनहारिन वेश्याएं तो एक सिरे से गायब ही हो रही हैं ।

३र३ परिवेश पर आधारित वेश्याओं की कोटियां :

परिवेश के आधार पर यदि वेश्याओं का कोटि-निर्धारण करना हो तो उन्हें हम दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं : /1/ ग्रामीण परिवेश की वेश्याएं और /2/ नगरीय परिवेश की वेश्याएं ।

/1/ ग्रामीण परिवेश की वेश्याएं :

जैसा कि ऊपर अनेक बार निर्दिष्ट किया गया है कि ग्रामीण परिवेश में सामाजिक मान-मर्यादा और पहचान के कारण प्रकट-समूह की वेश्याएं नहीं होती हैं । ग्रामीण क्षेत्र की अधिकांश वेश्याएं अप्रकट समूह की होती हैं और प्रकटतः वे खेत-मजदूरी , और प्रकार की मजदूरी या बड़े लोगों के यहां झाड़ू-पोंचा-बर्तन का काम करती हैं । स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी आज तक ग्रामीण×क्षेत्र× क्षेत्रों में सामंतवादी मूल्य ही चल रहे हैं । गांव के बड़े लोग , उच्चवर्गीय लोग , जमींदार और ~~xxxxx~~ महाजन लोग आज भी निम्न जाति के लोगों की बहू-बेटियों की इज्जत के साथ खेलना अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझते हैं । स्थिति की विडंबना तो यह है कि कई बार निम्नजाति के लोगों में से ही कोई इनकी भड़वागिरी करता है । "धरती धन न अपना " का मंगू इसी प्रकार का एक भड़वा है । चौधरी हरनामसिंह का भतीजा हरदेव मंगू की सहायता से ही चाची×छलके× प्रीतो की अविवाहिता जवान लड़की लच्छो की लाज दिन-दहाड़े लूटता है । हरनामसिंह भी अपनी जवानी में प्रीतो से जुड़ा हुआ था । मंगू इतना बेगैरत हो गया है कि उसके सामने उसकी बहन ज्ञानो की छातियों की तुलना कच्चे

खरबूजे से की जाती है और वह चुप रह जाता है । [29] "नदी फिर बह चली" {हिमांशु श्रीवास्तव}, " जल टूटता हुआ ", "सूखता हुआ तालाब " {डा. रामदरश मिश्र} ; " अलग अलग वैतरणी" {डा. शिवप्रसाद सिंह}, " मैला आंचल " {रेणु} आदि उपन्यासों में हम इस प्रवृत्ति को लक्षित कर सकते हैं । आदिम जातियां या जनजातियों की औरतों के साथ जो वेश्यानुमा व्यवहार होता है, उसका चित्रण "कब तक पुकारूं " {डा. रांगेय राघव} तथा "अल्मा कबूतरी" {मैत्रेयी पुष्पा} जैसे उपन्यासों में हमें प्राप्त होता है ।

/2/ नगरीय परिवेश की वेश्याएं :

नगरीय परिवेश की वेश्याओं में भी हमें दो रूप मिलते हैं — /क/ प्रकट और /ख/ अप्रकट । प्रकट स्वरूप की वेश्याएं तो महानगरों के लालबत्ती विस्तारों तथा झोंपड़पट्टी विस्तारों में प्राप्त होती हैं । कोई उन्हें वेश्या कहें उसमें उन्हें किसी प्रकार का लांछन या गाली का अहसास नहीं होता है, क्योंकि उनको मालूम हैं कि वे वेश्याएं हैं और उन्हें यह भी मालूम हैं कि लोग भी जानते हैं कि वे वेश्याएं हैं । अतः किसी भी प्रकार के दुराव-छिपाव की वहां आवश्यकता नहीं है । जैनेन्द्र ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है — "यहां किसी भी व्यक्ति को यह कहने का लोभ नहीं है कि वह सच्चरित्र है । यहां सच्चरित्रता के अर्थ में मानव का मूल्य नहीं माना जाता । दुर्जनता ही मानो कीमत है । ... यहां छल असंभव है, जो छल की शिष्ट समाज में शिष्ट समाज में जरूरी ही है । यहां तहजीब की मांग नहीं है, सभ्यता की आशा नहीं है । बेहयाई जितनी उघड़ी सामने आये उतनी ही रसीली बनती है । बर्बरता को लाज का आवरण नहीं चाहिए । मनुष्य यहां खुलकर सगर्व पशु हो सकता है । जो नहीं हो सकता, उसकी मनुष्यता में बट्टा समझा जाता है ।" [30] ऊपर जिस परिवेश की बात की गई है, उस परिवेश की वेश्याएं हमें "बोरीवली से बोरीबन्दर तक " {मटि-

यानी § , "कबूतरखाना" § सेठानियों के अलावा जिन लालबत्ती मिस्तारों की वेश्याओं का जिक्र है उनके लिए § , "मुरदाघर" §जगदम्बाप्रसाद दीक्षित § , "नदी फिर बह चली " § पटना की वेश्याएं — हिमांशु श्रीवास्तव § , "सलाम आखिरी" § मधु कांकरिया §, "परीक्षागुरु" § लाला श्रीनिवासदास — दिल्ली की वेश्याएं § , "चढ़ती धूप" § अंचल § , "प्रेत और छाया" , " पर्दे की रानी " §इलाचन्द्र जोशी § , "दशार्क" § रंजना के अतिरिक्त जिन पेशेवर वेश्याओं का वर्णन है उस संदर्भ में § आदि उपन्यासों में मिल जाती हैं । "अप्रकट स्वरूप की वेश्याएं कालगर्ल , होटेल वेश्याएं , आदि के रूप में मिलती हैं । ये समाज में ही रहती हैं और कुछ भी हो सकती हैं — कालेज की छात्राएं , वर्किंग गर्ल्स , वर्किंग विमेन , सुखी-संपन्न घर की गृहिणियां ।

"परिवेश" का अर्थ केवल स्थान या जगह ही नहीं होता , परिवेश में "काल" का भी समावेश होता है और इस दृष्टि से इस कोटि में और भी वर्ग आ सकते हैं , जैसे ऐतिहासिक परिवेश , पौराणिक परिवेश आदि । "सलाम आखिरी" उपन्यास में सुकीर्ति की बौद्धिक चर्चा मैथ्येन और विजय से होती है और विजय तो इतिहास का विद्यार्थी भी रहा है , अतः प्राचीन समय में भी वेश्याएं पायी जाती हैं । इसी उपन्यास में विजय के साथ चर्चा के दौरान प्राचीन ऐतिहासिक वेश्याओं का जिक्र हुआ है जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार की मदनिका नामक गणिका , बौद्ध समय की आम्रपाली , जैन-समय की कोशा और कोषी , लोई आदि का उल्लेख मिलता है । [31] ऐतिहासिक वेश्याओं के संदर्भ में "दिव्या" §यशपाल§, "सुहाग के नूपुर " § अमृतलाल नागर § , "[illegible] आदि उपन्यास हैं जिनमें तत्कालीन वेश्याजीवन का चित्रण उपलब्ध होता है । पौराणिक समय पर आधारित उपन्यासों को पौराणिक उपन्यास कहते हैं । डा. नरेन्द्र कोहली के पौराणिक उपन्यास "संघर्ष की ओर " , " युद्ध " , "अंतराल"

[library stamp]

§महासमर भाग-5 § आदि में तत्कालीन xxxxxx वेश्याओं का चित्रण हुआ है । इनमें प्रथम दो रामायण पर आधारित उपन्यास हैं और "अंतराल" महाभारत पर आधारित उपन्यास है । इनके अतिरिक्त "वयं रक्षामः " § आचार्य चतुरसेन शास्त्री § , "पथप्रज्ञा" § वीणा सिन्हा§ , "कर्ण की आत्मकथा" § मनु शर्मा § आदि उपन्यासों में भी पौराणिक काल की वेश्याओं का चित्रण हुआ है ।

§ग§ लालबत्ती विस्तार की वेश्याएँ :

वैसे तो उपर्युक्त चर्चा में अनेक स्थानों पर जहाँ प्रकट-समूह की वेश्याओं का जिक्र हुआ है , वहाँ लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं की चर्चा हुई ही है , किन्तु यहाँ उन पर अलग से विचार इसलिए किया जा रहा है कि इनमें भी तरह-तरह की कोटियाँ या प्रकार पाए जाते हैं । लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं को विश्लेषण के आधार पर हम निम्न कोटियों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ झोंपडपट्टी की वेश्याएं , /2/ लाइनवालियाँ , /3/ कमरेवालियाँ , /4/ अधिया-सिस्टम पर चलने वाली वेश्याएं , /5/ फ्लाइंग वेश्याएं , /6/ कोठेवालियाँ आदि-आदि ।

/1/ झोंपड़पट्टी की वेश्याएं :

अनेक नगरों तथा महानगरों की झोंपड़पट्टियों में वेश्यावृत्ति का व्यवसाय धड़ल्ले से चलता है । "मुरदाघर" , " अनारो" §मंजुल भगत§ , " टपरेवाले " § कृष्णा अग्निहोत्री § "बसन्ती" § भीष्म साहनी § आदि उपन्यासों में इन झोंपड़पट्टी वाली वेश्याओं की दयनीय स्थिति का दिल दहला देनेवाला वर्णन मिलता है । इनमें "मुरदाघर" में माहिम की झोंपड़पट्टी , अनारो" में दिल्ली की झोंपड़पट्टी , " टपरेवाले" तथा "बसन्ती" में भी दिल्ली की झोंपड़-पट्टी को लिया गया है । "नदी फिर बह चली" में पटना की झोंपड़-पट्टियों को लिया गया है ।

/2/ लाइनवालियां :

लाइनवाली वेश्याएं उनको कहा जाता है जिनको अपने ग्राहकों को ढूंढने के लिए लालबत्ती विस्तार की गलियों में या झोंपड़-पट्टियों केबाहर या फुटपाथों पर खड़े रहना पड़ता है। कई बार वे नागरिक इलाकों में भी पायी जाती हैं। बड़ौदा की बात करें तो स्टेशन के सामने जो दो छोटे-छोटे बाग हैं, उनके आसपास इस प्रकार की वेश्याएं अक्सर पायी जाती हैं। ग्राहक मिलने पर वे उनको सस्ते होटलों में या झोंपड़पट्टियों के अपने कमरों में या किसी दूसरे के कमरे को कुछ समय पर किराये लेकर अपना व्यवसाय चलाती हैं। इनकी स्थिति सबसे दयनीय होती है। कई बार ग्राहकों के कारण इनमें परस्पर झड़प भी हो जाती है। "मुरदाघर" में मैना और बशीरन के बीच ग्राहक को लेकर झगड़ा होता है - "बशी-रन! साली कुत्ती की अउलाद! आपा-आपा क्या बोलती! मेरे से बात कर। नई जाती थी तू दौड़-दौड़ के उधर ? बाबू डिरेबर मेरे कने आता था तो तू कायकू मरती थि बीच में ? बोल छिनाल! कायकू आती थी ? मैं कभी आई क्या तेरे बीच में ? जभी शेरू मेरेकू पांच रूपया देता था ... तू कायकु तयार हुई दो रूपयों में ?" [32] "आखिरी सलाम" की अधिया सिस्टम पर चलने वाली वेश्या रमा को यह भय खाये जा रहा है कि कभी मालकिन ने यदि निकाल दिया तो उसका क्या होगा ? उसे भी ग्राहकों के लिए सड़क पर सस्ती रेट पर खड़े रहना पड़ेगा या फिर दलालों से निपटना होगा। "अम लोगों की आदतें अब ऐसी रईस हो चुकी हैं कि अम सड़क पर नहीं खड़ी रह सकतीं अभी तो फिर भी एक ~~खूंटा~~ खूंटा है इज्जत का।" [33] मतलब कि यहां भी वर्गभेद है। ये लाइनवाली वेश्याएं उनके संस्तरण के सबसे निचले पायदान पर हैं। "आखिरी सलाम" के अतिरिक्त "मुरदाघर", "नदी फिर बह चली", "टपरेवाले" आदि उपन्यासों में इन लाइनवालियों का वर्णन उपलब्ध होता है।

/3/ कमरेवालियां :

कमरेवाली वेश्याएं उनको कहा जाता है, जिनके पास अपना या किराये का कमरा हो । प्रत्येक लालबत्ती विस्तार की वेश्या का एक सपना होता है कि उसका अपना कोई कमरा हो । खुद का कमरा होने से वेश्यावृत्ति से होनेवाली आमदनी पर केवल अपना ही अख्त्यार रहता है । कमरा न हो तो उस आमदनी का अच्छा-खासा हिस्सा तो दूसरे ले जाते हैं । "आखिरी सलाम" की पिन्की ऐसी कमरे वाली वेश्या है । उसका अपना कमरा है । उसके पास कमरा है क्योंकि पिन्की को यह पेशा विरासत में मिला है । उसमें अपने पेशे को लेकर कोई अपराध-बोध भी नहीं है ।" पिन्की का सीधा जीवन-दर्शन था "व्हेन रेप इज इनएविटिबल, लाई डाउन एण्ड एन्ज्वॉय इट." §बलात्कार जब अपरिहार्य ही तो लेटकर उसका मजा लीजिए§ गायत्री, नूरी, रमा -- या ~~xxxx~~ चम्पा की तरह न तो उसे अपने पेशे से घृणा थी और न ही ग्राहकों पर आक्रोश और न ही जमाने से किसी प्रकार का गिला-शिकवा और न ही बातचीत में कोई दैन्य भाव । पशु के समान वह इस नारकीय जीवन से भी रस सोख लेती थी । ... नैतिकता-अनैतिकता, पाप-बोध, नारी-अस्मिता, आत्म-हनन आदि सभी सवालों से मुक्त पिन्की के क्षणजीवी मानस को चिन्ता रहती थी तो सिर्फ अपने धन्धे और ग्राहकों की । वह इस कारण भी स्वयं को सुखी मानती थी कि जहां अधिकांश वेश्याओं को ऊंचे भाड़े पर एक दिन या रात के हिसाब से कमरा लेना पड़ता था, वहीं उसके पास खुद का एक कमरा था अपने कर्ममय जीवन की नौका खेने के लिए । करीब सौ स्क्वेयर फीट का एक ऊंचा सीलन भरा, झड़ती दीवारों वाला एक अन्धेरा बन्द-बन्द-सा कमरा । उसी एक कमरे की मल्कियत और अपने जिस्म के तख्ते-ताउस पर बैठी पिन्की को यहां आने वाले ग्राहक भी "भले आदमी" लगते हैं । ऊंचा तख्तेनुमा पलंग । उस पर पसीने की बदबू से गन्धाती पतली और मैली चादर

में लिपटा बिस्तर । गन्दा काला कम्बल ।" [34] यही उसका संसार है । और आगे का सपना है कि ढलती उम्र में जब शरीर साथ नहीं देगा और ग्राहक नहीं आयेंगे तब किसी कमसीन लड़की को लेकर उससे धन्धा करवायेगी । परन्तु स्थिति की विडम्बना यह है कि गर्भपात के कारण हुई असमय मृत्यु के कारण उसकी ही बेटी मलका को उसके स्थान पर बैठना पड़ता है । [35]

/4/ अधिया-सिस्टम पर चलनेवाली वेश्याएं :

जो वेश्याएं किसी कोठेवाली , चकलेवाली या उनकी अपनी भाषा में मालकिन , के अन्तर्गत काम करती हैं उनको अधिया-सिस्टम वाली वेश्याएं कहा जाता है । वे दिनभर जितना भी कमाती हैं उसका आधा हिस्सा मालकिन को देना पड़ता है । उसके बदले में मालकिन उनको रहने का ठिकाना देती है । उनके लिए ग्राहकों को जुटाने का काम भी मालकिन और उसके दलाल (भड़वे) करते हैं । "रेट्स" वग़ैरह भी वही तय करती हैं । खाना-पीना , साबुन , पावडर , सौन्दर्य-प्रसाधन आदि का खर्चा उनको मालकिन को देना पड़ता है । जरूरत पड़ने पर मालकिन उनको कर्ज पर पैसा भी देती है जिसका अच्छा-खासा ब्याज वह वसूलती है । हरेक वेश्या का एक सपना होता है कि भविष्य में उसका अपना एक कोठा हो और उसे भी मालकिन कहने वाली वेश्याएं उसके अधीन काम करती हों । "सलाम आखिरी" उपन्यास में इस अधिया सिस्टम पर चलने वाली वेश्याओं का बड़ा ही ब्यौरेवार यथार्थ चित्रण हुआ है ।xxxx "छः वेश्याएं इस चकले में । अधिया-सिस्टम के अंतर्गत मीना की जी-हुजूरी में । कच्ची कचनार नूरी , झिलमिल कृष्णा , हल्ला वेश्या रमा , पुराना चावल नलिनी , तेजपत्ता जूली । दरिद्रता की तरह दयनीय चम्पा ।" [36] इसके अतिरिक्त गायत्री , महुआ , कजली, कमली , पिनाकी , xxxx बुलबुल , सोना , रेशमी आदि

वेश्याओं का वर्णन प्रस्तुत उपन्यास में है जो इस अधिया-सिस्टम पर चलती हैं । [37]

/5/ फ्लाइंग वेश्याएं :

फ्लाइंग वेश्याएं उनको कहते हैं जो धन्धा तो लालबत्ती विस्तारों में ही करती हैं, लेकिन स्थायी रूप से लालबत्ती विस्तारों में रहती नहीं है । वे आसपास के इलाकों से आती हैं । लालबत्ती विस्तारों की मालकिनें या चकलावालियों और दलालों से उनके सम्पर्क होते हैं और वे वहां दिन भर के लिए कमरा किराये पर लेकर धंधा करती हैं । वे जिन गांवों या कस्बों से आती हैं, वहां लोगों को, समाज को, घर-परिवार वालों को बताकर आती हैं कि वे शहर में कोई इज्जतदार नौकरी करती हैं । "सलाम आखिरी" उपन्यास की गायत्री ऐसी ही एक फ्लाइंग वेश्या है । वह कोलकाता के पास के ही गांव मागराघाट से आती थी । सुबह ग्यारह-बारह बजे तक आ जाती थी और शाम ढले ही चली जाती थी । उसके पति ने उसे छोड़ दिया था । अपनी सास के साथ रहती है । सास उसके बच्चों को संभालती है और वह सास को । उसने अपनी सास को बता रखा है कि वह शहर में बड़े-बड़े घरों में चौका बर्तन करती है । [38]

/6/ कोठेवालियां :

इनको चकलेवालियां, मालकिन आदि कहा जाता है । एक तरह से हम उनको {सीनियर} प्रौढ़ और निवर्तमान { निवृत्त } वेश्या कह सकते हैं । प्रत्येक कोठेवाली अपनी जवानी में या किशोर-अवस्था में वेश्या रह चुकी होती है । जो कुछ चालाक, बुद्धिमान या होशियार वेश्याएं होती हैं वे अपने भविष्य का प्लानिंग करती हैं। पैसे बैंक में जमा करवाती हैं और पैंतीस-चालीस साल की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते कोठे की मालिक हो जाती है । वैसे यह प्रत्येक वेश्या का सपना भी होता है । व्यक्ति प्रायः सपने भी अपने व्यवसाय को

केन्द्र में रखकर ही देखता है । एक वेश्या के सपने की इन्तिहा कोठेवाली बनने में होती है ।"कोठा" उसका अपना एक छोटा-सा ही सही मगर राज्य होता है । उसके तख्तो-ताउस की वह बेगम होती है । उसे भी घर चलाने का या राज्य चलाने का सुख मिलता है । प्रौढ़-गृहिणियाँ अपने बहू-बेटों , और कभी-कभी , अपने पतियों पर , राज्य करती हैं । यह सुख इन वेश्याओं को कभी नहीं मिलता । अतः उसकी पूर्ति वे "कोठे" की मालकिन बनकर पूरी करती है । कई बार उसमें उनको एक "मनोवैज्ञानिक-संतोष× संतोष " [सायकोलाजिकल सतिस्फेक्शन] मिलता है ।" वेश्या-जीवन का यह भी एक विद्रूप है कि हर वेश्या किसी और को वेश्या बनती देखकर ही अपने वेश्या-जीवन के हलाहल को झेल पाती है ।" [39] "सलाम आखिरी" उपन्यास में लेखिका ने माया मैडम नामक एक कोठेवाली का चित्रण किया है ।" अविनाश कविराज स्ट्रीट की एक लम्बी सुरंग-सी गली , जिसका एक सिरा बाहर सड़क पर खुलता है , उसी के अंतिम छोर पर स्थित एक दो मंजिला साधारण-सा मकान । उसीकी एकदम नीचे की तीन छोटे-छोटे कमरों का एक साधारण-सा फ्लेट जिसका मासिक भाड़ा है बारह हजार रूपये [लालबत्ती इलाके में होने के कारण फ्लेट का भाड़ा लगभग तिगुना होता है , आम इलाकों से] । यह फ्लेट एक चकला , निवर्तमान वेश्या मैडम मीना का , जहाँ से चलाती है वह अपना राजपाट । पिछले आठ-नौ वर्षों से उसने वेश्यावृत्ति छोड़ दी है और अपना स्वतंत्र चकला चला रही है , जो कि हर आम वेश्या का सर्वाधिक महत्वाकांक्षी स्वप्न है , अपना स्वतंत्र चकला ।" [40] इन कोठेवालियों में कुछ तो बड़ी जालिम होती है । जिन्दगी की नग्न कठोरताओं ने उनको इतना रूक्ष बना दिया होता है कि उनके प्रत्येक कार्य में किसीको "कुटनीपन" नज़र आ सकता है । लेकिन कुछ कोठेवालियाँ सहृदय व कोमल भी होती हैं । उनका व्यक्तित्व नारियल-सा होता है , ऊपर से कठोर और रूखा , लेकिन भीतर से कोमल और रसभरा । अपने अन्तर्गत

काम करने वाली वेश्याओं के प्रति उनका रवैया मानवतापूर्ण होता है । "मैडम मीना" उनमें से एक है । वह अपने यहां काम करने वाली वेश्याओं का खूब ध्यान रखती है । लड़केनुमा ग्राहकों को भगा देती है और किसी नाबालिग लड़की को "छिकुरिया" (बाल-वेश्या) नहीं बनाती है । कुछ वर्ष पहले उनको भी "छिकुरिया" बनाया गया था । वह उसके दर्द को कभी भूली नहीं है । हां, थोड़ा-बहुत "कुटनीपना" उनमें भी है, किन्तु वह तो इस व्यवसाय में रखना ही पड़ता है । रमा मैडम मीना की खूब तारीफ करती है । उनके पहले रमा की जो मालकिन थी वह बहुत ही जालिम और खूसट थी । प्रस्तुत उपन्यास में ऐसी कई "कोठेवालियों" का जिक्र हुआ है । इनके कोठों में नाबालिक लड़कियों की खरीद-फरोख्त भी होती रहती है । "संलाप" वाली इन्द्राणी दी की वजह से कई बार कुछ लड़कियों को बचा लिया जाता है । ऐसी एक कोठेवाली है — भाटपुर की माया देवनार । नाबालिक लड़कियों को "छिकुरिया" कैसे बनाया जाता है, उसका तरीका भी वह उपन्यास-नायिका सुकीर्ति को बताती है । ऐसी लड़कियों की योनि में "शोले" (कागज के पुड़िके) रखे जाते हैं और फिर उनको ठण्डे पानी के टब में घण्टों बिठाया जाता है । कुछ महीने तक इस प्रक्रिया के चलते रहने पर उस लड़की के गुप्तांग कुछ-कुछ विकसित होने लगते हैं । शेष काम ग्राहक कर देते हैं । xxxxxxxxxx लड़की को जब पहली बार "छिकुरिया" बनाया जाता है, तो इनकी पारिभाषिक शब्दावली में उसे "नथ उतारना" कहते x हैं । ऐसी लड़कियों का "रेट" औरों की तुलना में थोड़ा ज्यादा होता है ।

(म) हाई-फाई सोसायटी की वेश्याएं :

इन वेश्याओं की मांग ऊंची सोसायटी के पुरुषों में होती है । ये लोग बड़े-बड़े उद्योगपति, राजनेता, राजा-महाराजा, जमींदार, सामन्त, बड़े धार्मिक नेता आदि वर्ग के होते हैं । कई बार

इन लोगों की पसन्द भी "इण्टरनेशनल " होती है । आलोच्य उपन्यासों में "चम्पाकली" , (ऋषभचरण जैन) , "हिज हाईनेस " (ऋषभचरण जैन) , "जनानी सवारियाँ " , "तीन इक्के" , "मयखाना" (ऋषभ-चरण जैन) ; "मुक्तिबोध" , "दशार्क " (जैनेन्द्र) , "नदी फिर बह चली " (हिमांशु श्रीवास्तव) , "सलाम आखिरी" (मधु कांक-रिया) , "ढहती दीवारें" (मीना दास) , "बंटता हुआ आदमी" (निरूपमा सेवती) , "पतझर की आवाजें" , "छाया मत छूना मन " (हिमांशु श्रीवास्तव) , "नावें " (शशिप्रभा शास्त्री) , "चिड़िया-घर " (गिरिराज किशोर) , "कृष्णकली " (शिवानी) आदि उपन्यासों में हमें इस प्रकार की वेश्याओं का चित्रण मिलता है ।

इस वर्ग की वेश्याओं को हम निम्नलिखित कोटियों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ नृत्यांगना या तवायफ प्रकार की वेश्याएं , /2/ कुलीन धनाढ्य घरानों की वेश्याएं , /3/ कालगर्ल प्रकार की वेश्याएं , /4/ मोडलिंग और फिल्म-क्षेत्र की वेश्याएं , /5/ सिंगापोर की मसाज वेश्याएं आदि-आदि ।

/1/ नृत्यांगना या तवायफ प्रकार की वेश्याएं :

"चम्पाकली" , " हिज हाईनेस " (ऋषभचरण जैन) ; "सेवासदन" , "कांचघर" (डा. रामकुमार भ्रमर) , "कृष्णकली" (शिवानी) आदि हिन्दी उपन्यास तथा "उमरावजान अदा" (मिर्जा रूस्वा) , "साहिब बीबी गुलाम" ~~आxxxx~~ (विमल मित्र) आदि क्रमशः उर्दू तथा बंगला उपन्यासों में हमें इस प्रकार की वेश्याएं मिलती हैं । वस्तुतः नाच-गाना (मुजरा) आदि से वे अपने ग्राहकों को रिझाती हैं , पर बड़ी रकम देखे पर वे कई बार बड़े लोगों की यौनेच्छा भी तृप्त करती हैं । इनके ऐसे ग्राहकों में बड़े-बड़े रईसजादे , सामन्त और राजा-महाराजा तथा ~~मिनिस्टर्स~~ मिनिस्टर्स आदि होते हैं ।

"चम्पाकली" उपन्यास की नायिका चम्पाकली पेशे से तवायफ और वेश्या होते हुए भी किसी पतिव्रता स्त्री से कम नहीं है। उसका आशिक रामदयाल दिल्ली का रईस आदमी है। किन्तु उसकी मृत्यु के बाद वह मुफलिसी और गुमनामी की जिन्दगी बसर करती है, लेकिन रामदयाल के ~~भाई~~× चचेरे भाई शीतलसिंह की ताबेदारी नहीं स्वीकार करती है। उपन्यास में शीतलसिंह गरजते हुए कहता है —" उत्तमसिंह। इस हरामजादी को मैं तुम्हारे सुपुर्द किए जाता हूं। तुम दोनों आदमी महीने भर तक इस चुड़ैल का नखरा झाड़ते रहो और फिर उसकी नाक और जीभ काटकर भीख मांगने केलिए छोड़ देना।" 42 उग्रजी के "हिज हाईनेस", "तीन इक्के", "जनानी सवारियां" आदि उपन्यासों में भी इस प्रकार की तवायफें मिलती हैं।

"सेवासदन" की भोली बनारस की एक मशहूर तवायफ है। तीज-त्यौहारों पर उसे इज्जतदार लोगों के यहां मुजरे के लिए बुलाया जाता है। कई बार धार्मिक समारोहों पर भी उसे नृत्य-गान के लिए आमंत्रित किया जाता है। "सेवासदन" की नायिका सुमन इसी भोली के यहां आश्रय पाकर "गानेहारिन वेश्या" (तवायफ) हो जाती है। " कांचघर " में मराठी लोक-नाट्य तमाशा में काम करने वाली तमाशेवाली बाइयों — कावेरीबाई, माला, रत्ना आदि — का चित्रण है। ये भी नाचगान के द्वारा लोगों का मनोरंजन करती हैं और वक्त-बेवक्त उनको बड़े लोगों के यहां से भी बुलावे आते हैं। तब उन्हें उनको भी खुश (?) करना पड़ता है।

इस प्रकार की वेश्याओं के संदर्भ में शिवानी का "कृष्णकली" उपन्यास विशेष उल्लेखनीय कहा जा सकता है। प्रस्तुत उपन्यास की माणिक और पन्ना मशहूर नृत्यांगनाएं हैं। बड़े-बड़े राज-घरानों से उनके ताल्लुकात हैं। " नाचना-गाना पन्ना का मातृ-व्यवसाय है। उसकी मां मुनीर प्रसिद्ध नृत्यांगना एवं नेपाल के राणा की रखैल थीं। उसकी तीनों पुत्रियां माणिक, हीरा और पन्ना के

पिता अलग-अलग थे । माणिक राधा की पुत्री थी । राजवंशी पिता के तीखे नैन-नक्श एवं सुन्दरता के साथ उसे उसकी क्रूरता , जिद्दीपन एवं अहंकार भी विरासत में मिले थे । हीरा लाट साहब के दामाद के हब्शी नौकर रौबी की पुत्री थी तो पन्ना मोहक व्यक्तित्व एवं रंगीन तबियत के धनी लाट साहब के ए.डी.सी. राबर्टसन की पुत्री थी । कार एक्सडेण्ट में मुनीर एवं हीरा की मृत्यु हो जाने पर माणिक माता के व्यवसाय को संभाल ही नहीं लेती , प्रत्युत उसे अनेकगुना बढ़ा भी देती है ।"[43] उपन्यास की नायिका कृष्णकली पन्ना की पुत्री है । वह पन्ना और विद्युतरंजन मजूमदार की पुत्री है । नृत्यांगना होने के बावजूद पन्ना विद्युतरंजन मजूमदार को छोड़कर अन्य किसीको अपनी तर्जनी तक का स्पर्श नहीं होने देती । उसीसे पन्ना को प्रौढ़ावस्था में गर्भ रहता है । मारे संकोच के यह सत्य वह अपनी बड़ी बहन माणिक पर प्रकट नहीं होने देती ~~और~~ और बिना सूचना दिए अल्मोड़ा चली जाती है । वहां उसका अंतरंग परिचय डा. पैट्रिक से होता है । पन्ना की पुत्री "क्षणिक अतिथि" के रूप में आकर चली जाती है । वस्तुतः कली [कृष्णकली] कुष्ठरोग से पीड़ित माता-पिता की संतान है । जब पन्ना की पुत्री का असमय निधन हो जाता है तब उसका स्थान कली ग्रहण करती है । इस रहस्य को गोपनीय ही रखा जाता है । नुपुर की झंकार , तबले की थाप , सारंगी की संगत एवं विभिन्न राग-रागीनियों के बीच कली का शैशव किलकारियां भरता है । कली के आने से "पीली कोठी" में एक हलचल-सी मच जाती है । माणिक के उस महलनुमा "कोठे" का नाम ही "पीली कोठी" था । माणिक को कली का आना अच्छा लगता है , क्योंकि उसकी व्यावसायिक बुद्धि कली के श्याम-सलोने रूप की इयत्ता को बहुत पहले ही आंक लेती है । उसके उस भावी रूप की ~~शब~~ शीतल छाया में वह अपने बुढ़ापे का विश्राम ढूंढ रही थी । लेकिन पन्ना उसे "पीली कोठी" के उस विषाक्त वातावरण से दूर ही रखना चाहती है । अतः वह डा. पैट्रिक [रोजी] की सहायता से उसे किसी पर्वतीय प्रदेश के कान्वेण्ट के ~~बxx~~ बोर्डिंग स्कूल में दाखिल

करवा देती है । इस बात को लेकर दोनों बहनों में झगड़ा भी होता है और वह भी किसी पर्वतीय प्रदेश में चली जाती है । वस्तुतः उपन्यास तो कृष्णकली के आसपास है । किन्तु मातृ-पक्ष के इतिहास के ब्याज से उसमें ये अध्याय जुड़ गए हैं और जहां तक हमारे अध्ययन का संबंध है । हमें भी केवल उसी से मतलब है । शेष कथा बड़ी रोमानी और रोमांचक है ।

/2/ कुलीन धनाढ्य घरानों की वेश्याएं :

इस प्रकार की वेश्याओं का चित्रण "मुक्तिबोध" , "रेखा" , "नदी फिर बह चली" , "मछली मरी हुई " , " किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " , "कबूतरखाना" , "सलाम आखिरी" , "पतझर की आवाजें " , "चिड़ियाघर" , "एक चूहे की मौत ॥ बदी उज्जमां ॥ , "कंकाल" आदि उपन्यासों में उपलब्ध होता है । "मुक्तिबोध" की नीलिमा जाने-माने राजनीतिज्ञ सहायबाबू की रखैल है । वैसे उसके पति भी आई.ए.एस. आफिसर हैं और उनका आर्थिक स्टेटस भी काफी ऊंचा है । "रेखा " उपन्यास में रेखा , मिसेज चावला आदि को हम इस कोटि में रख सकते हैं । "मछली मरी हुई" की कल्याणी और शीरीं मेहता , "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की सेठानी नर्मदाबेन , "कबूतरखाना" की सेठानियां , "सलाम आखिरी" में पार्क स्ट्रीट के "ब्यूटी-पार्लर" में आने वाली महिलाएं , "पतझर की आवाजें " की उषा , "चिड़ियाघर" की मिसेज रिजवी आदि सब कुलीन धनाढ्य घरानों की शिक्षित महिलाएं हैं और अपनी अतिरिक्त विलासिता को पोषने के के लिए बx वेश्यावृत्ति करती हैं । "नदी फिर बह चली" में एक बड़े आफिसर की पत्नी इस व्यवसाय में पायी जाती है । उस आफिसर को कुलीन घरानों की घरेलू किस्म की औरतें पसंद थी । अतः रात को जब वह कहता है कि "मेरे लिए जो माल मंगवाया है , उसे पेश किया जाए । " तो उसके आश्चर्य और आघात का ठिकाना नहीं रहता है , जब वह अपनी ही बीवी को एक वेश्या के रूप में देखता है । [44] बदी उज्जमां

कृत " एक चूहे की मौत" में महानगरों के उच्च अधिकारियों की रंगीन सोसायटियों का पर्दाफाश किया गया है । इन लोगों के यहां "की क्लब " चलते हैं । क्लब के सभी सदस्य अपनी पत्नियों और प्रेमिकाओं को लेकर आते हैं । सब अपनी-अपनी गाड़ियों की चाबियां एक तश्तरी में रख देते हैं । उस पर एक कपड़ा ढंक दिया जाता है । फिर सभी सदस्य एक-एक करके चाबी उठा लेते हैं । जिसके हाथ में जिसकी चाबी आवे उसकी पत्नी को लेकर सभी अलग-अलग कमरों में चले जाते हैं । [45] "प्रश्न और मरीचिका" की रूपा आण्टी भी अपने राजनीतिक फायदों के लिए रामकुमार गाबड़िया नामक व्यापारी के साथ होटल में सोती है । इसी उपन्यास में अमरीकी संपन्नता का बड़ा ही बीभत्स रूप मिलता है । एक अमरीकन महिला सोफी के कथनानुसार वहां लोगों के पास मकान , कार , फर्नीचर आदि सब होता है , किन्तु कर्ज पर लिया हुआ , उसकी किश्तों को चुकाने केलिए स्त्री-पुरुष दोनों को नौकरी करनी पड़ती है । कई बार नौकरी के दौर में विवशतावश दूसरों के साथ सोना भी पड़ता है । [46] प्रसादजी के "कंकाल" उपन्यास में अभिजात वर्ग के व्यभिचार का कच्चा-चिट्ठा खोला गया है ।

/3/ कालगर्ल प्रकार की वेश्याएं :

बड़े-बड़े तीन सितारा या पंचतारक होटलों के मैनेजरों के पास कई शिक्षित कुलीन कालेज कन्याओं तक के नंबर होते हैं । वे सब इन हाई-फाई होटलों में व्यवसाय करती हैं । ग्राहकों की मांग के अनुसार नंबर घुमाकर उस लड़की को बुला लिया जाता है । रात-भर ग्राहक उनके साथ रंगरलियां मनाते हैं । शराब के दौर-दौरे चलते हैं । ये सब ऐसी तेज-तर्रार लड़कियां होती हैं कि दिन में कहीं मिल जाए तो कोई कह नहीं सकता कि यह लड़की जिस्मफरोशी का धंधा करती होगी । धनाढ्य परिवारों की लड़कियां कई बार दूसरे शहरों में विश्वविद्यालयों में पढ़ती हैं । ये कालेज छात्राएं कई बार कुसंगति में पड़कर शराब-सिगरेट और ड्रग्ज़ के रवाड़े चढ़ जाती

हैं और फिर उनको इन चीजों का "एडिक्शन" हो जाता है । मां-बाप उनकी फीस, के, बोर्डिंग के, खाने-पीने के, पुस्तकों के पैसे तो भेजते हैं : लेकिन इनके ऐसे अतिरिक्त खर्चों के पैसे तो वे नहीं भेज सकते । फलतः अपने इन अतिरिक्त खर्चों के लिए तथा मौज-मस्ती के लिए ये लड़कियां कालगर्ल बन जाती हैं । आलोच्य उपन्यासों में "नदी फिर बह चली", "मछली मरी हुई" "सलाम आखिरी", "छाया मत छूना मन", "नदी नहीं मुड़ती" आदि उपन्यासों में इस प्रकार की वेश्याओं का चित्रण हुआ है ।

/4/ मोडलिंग और फिल्म-क्षेत्र की वेश्याएं :

बाजारीकरण के इस दौर में हर उत्पाद {प्रोडक्शन} की खपत के लिए अनेक लड़कियों से मोडलिंग करवायी जाती है, फैशन-डिजाइनरों द्वारा "रैम्प" पर अर्धनग्न लड़कियों का केट वाकिंग "होता है, हजारों लड़कियां भारत के विभिन्न प्रदेशों तथा नगरों से फिल्म-अभिनेत्री बनने के लिए निकल पड़ती हैं । इनमें से अनेक असफल लड़कियों को अन्ततः विवश होकर जिस्मफरोशी के व्यवसाय में आना पड़ता है । "छाया मत छूना मन" की कंचन मोडलिंग का काम करती है । उसकी मां ही उसे उसके लिए प्रेरित करती है कि आजकल इसमें बहुत ज्यादा पैसे मिलते हैं ।[47] वह उसको होटलों में कैबरे-नृत्य की भी छूट देती है और अन्ततः इन्हीं रास्तों से होते हुए वह जिस्मफरोशी तक पहुंचती है । "बंटता हुआ आदमी" की सुनंदा भी फिल्मों में काम पाने के लिए जिस्मफरोशी का रास्ता अपनाती है । "हिज हाईनेस" की फिल्म अभिनेत्री जिसे महाराजा अपनी "रखैल" बनाते हैं और बाद में जिसे वे रानी भी बनाना चाहते थे, वास्तव में जिस्मफरोशी का काम भी करती है । आजकल टी.वी. चैनलों पर कई बार "कास्ट काउचिंग" की बातें होती हैं । मोडलों और "सी" या "बी" ग्रेड की फिल्म-अभिनेत्रियों को कई बार काम पाने के लिए कई-कई

फिल्म-प्रोड्यूसर्स , डायरेक्टर्स और एक्टर्स के साथ अपने शरीर का सौदा करना पड़ता है । उग्रजी के उपन्यास "फागुन के दिन चार" तथा डा. राही मासूम रज़ा के उपन्यास " दिल एक सादा कागज़" में इस दुनिया की नंगई को काफी उधेड़ा गया है । "दिल एक सादा कागज" में यह बताया है कि उन लोगों की भाषा में "रखैल" को "बहन" कहा जाता है —" छोटी हिरोइन बड़ी खूबसूरत थी । न होती होती तो मंझले प्रोड्यूसर ने उसे अपनी "बहन" क्यों बनाया होता ? बहन यानी रखैल ।" 48

/5/ सिंगापोर की मसाज वेश्याएं :

सिंगापुर में पुरुष के शरीर का मसाज करने के लिए लड़कियां होती हैं । ये लड़कियां बड़ी सुन्दर और कमसीन होती हैं । वस्तुतः इस मसाज के द्वारा पुरुष का "सीमरिंग" करती हैं, अर्थात् धीरे-धीरे उसे उत्तेजित करना । मसाज के कई प्रकारों में एक प्रकार "सेण्डविच मसाज " का होता है, जिसमें लड़कियां — मसाज गर्ल्स — अपने बीच में सुलाकर उसका मसाज करती हैं । पार्श्व वाला "बीचमें" नहीं, ऊपर-नीचे वाला बीच में । वैसे इन वेश्याओं का वर्णन किसी हिन्दी उपन्यास में हुआ नहीं है ।

(ग) धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याएं :

यद्यपि पूर्ववर्ती पृष्ठों में अनेक स्थानों पर इनकी चर्चा हुई है, तथापि यहां कुछ ब्यौरों के साथ तथा उनके उप-वर्गीकरण के साथ इनकी चर्चा की जायेगी । धार्मिक क्षेत्र की वेश्याओं को हम निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ देवदासियां, /2/ साधुआइनें और /3/ धर्मानुयायी संपन्न-कुलीन महिलाएं ।

/1/ देवदासियां :

मंदिरों में देवदासियों को रखने की परंपरा है । एक दृष्टि से हम इनको धार्मिक वेश्याएं ही कह सकते हैं । इनका काम मंदिर से जुड़े हुए सत्ता-संपन्न लोगों को खुश करना ही है । मधु कांकरिया के उपन्यास "सलाम आखिरी" में सुकीर्ति के मित्र विजय की चर्चा में देवदासियों का भी जिक्र आता है —" दरअसल जैसे-जैसे भगवान रईस होते गए , उनके ठाट-बाट बढ़ते गए , देवदासियों गणिकाओं और नर्तकियों की भरती भी बढ़ने लगी । समाज की विलास वृत्ति का सीधा सम्बन्ध वेश्यावृत्ति से है । ... देवदासी प्रथा का सबसे पुराना उल्लेख 1004 के लगभग तमिल भाषा में लिखे हुए एक शिलालेख में मिलता है । इस शिलालेख में उल्लेख है कि तंजावूर के मुख्य मंदिर में चोल महाराज द्वारा चार सौ तालाचेटी पेंडुगत ﴾देवदासियों﴿ की नियुक्ति हुई थी जिनमें से प्रत्येक को उनकी प्रतिष्ठा और कला साधना के अनुपात में देवार्पित जमीन का हिस्सा मिलता था । धीरे-धीरे यह देवदासी ~~xxxx~~ प्रथा खुल्लमखुल्ला गणिका संस्था बन गई थी — धर्म की आड़ में खुली वेश्यावृत्ति । ... मजे की बात यह थी कि देवदासियों की लड़कियां पेशा करती थीं और उनके लड़कों की पत्नियां कुलवधुओं के समान गृहस्थी की सीमाओं में रहती थीं । जो लड़कियां सुन्दर और गुणवती होती थीं , उन्हें देवदासी बनने की शिक्षा दी जाती थी और जो कुरूप और बुद्धू होती थीं उन्हें अपनी बिरादरी के लड़कों से ब्याह दिया जाता था । ... देवदासी बनाने के लिए लड़की को धूमधाम से मंदिर में ले जाया जाता था । तलवार अथवा देवमूर्ति के साथ उसका विवाह संपन्न होता था और इस विवाह ~~के प्रमाण स्वरूप देवदासी~~ की स्वजाति का कोई पुरुष देवपति की ओर से उसके गले में "ताली" बांधता था । ... संगीत , नृत्य एवं कामकला की शिक्षा में अति प्रवीण ये देवदासियां पुरुषों को जीवन की थकान और ऊब से उबार कर एक ललित लोक में ले जाती थीं । कामकला को ब्रह्मानंद सहोदर बनाना ही इन देव-

दासियों का काम था ।[49] आलोच्य उपन्यासों में "स्वर्गीय कुसुम" {किशोरीलाल गोस्वामी} तथा " देवदासी " {नरसिंहराम शुक्ल} आदि उपन्यासों में इन देवदासियों का जिक्र मिलता है ।

/2/ सधुआइनें :

कुछ धार्मिक संप्रदाय के मठों और मंदिरों में भक्तिनें या सधुआइनें होती हैं । इन सधुआइनों का जीवन बड़ा ही भ्रष्ट होता है । वे महन्तों, पुजारियों और उस मठ से जुड़े हुए उसके कर्ता-धर्ता लोगों की यौन-क्षु संतुष्टि करती हैं । "इमरतिया " {नागार्जुन} उपन्यास की लक्ष्मी "जमनिया मठ " के बाबा की खास है । लक्ष्मी को बाबा से गर्भ भी रह जाता है । पहले तो उसे गिराने की भरसक कोशिशें होती हैं, पर नाकामयाब रहने पर किसी तरह से बच्चे को इस दुनिया में लाया जाता है । परन्तु बाद में एक धार्मिक अनुष्ठान में उसकी बलि दी जाती है । आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि ये सब अधार्मिक कार्य- अनैतिक कार्य धर्म के नाम पर, तथाकथित धर्म के ठेकेदारों द्वारा किए जाते हैं । इसी मठ की गौरी तो एक विपुलवासनावती सधुआइन है । कपड़ों की तरह वह मर्दों को बदलती है और आश्रम में जब भी कोई कानूनी समस्या आती है, उसको लेकर कोई किसी प्रकार की फरियाद थाने में दर्ज करवाता है, तो वह कुछ रातें थाने में बिता आती है और सारी समस्याओं को सुलझा देती है । उपन्यास की नायिका "माई इमरतीदास " की नथ अभी उतारी नहीं गई है । उसके लिए उसके परिपक्व होने का और किसी बड़े मुरगे को फंसाने की प्रतीक्षा है । "मैला आँचल" के मेरी गंज गांव के मठ में भी "लछमी" नामक सधुआइन है जिसके पीछे मठ के सभी लोग पड़े हुए हैं । "एक मुठ सरसों " {मटियानी} में भी किसी धार्मिक संप्रदाय की भक्तिनों का जिक्र मिलता है, जो यह सब तो करती ही हैं, महाराजश्री के लिए नयी भक्तिनों को फंसाने का "कुटनी कर्म " भी करती हैं ।

/3/ धर्मानुयायी संपन्न कुलीन महिलाएं :

कई कुलीन, संपन्न और धार्मिक समझी जाने वाली बड़े-बड़े घर की महिलाएं धर्म की आड़ में पण्डों, पुजारियों, महन्तों और साधु बाबाओं से यौन-संतुष्टि प्राप्त करती हैं। ये पण्डे पुजारी खा-पीके मस्त सांड की तरह विहार करते हैं। जिन ऊंचे घरों की महिलाओं की यौन-संतुष्टि उनके पतियों द्वारा नहीं होती वे इस प्रकार के रास्ते अपनाती हैं। "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई" उपन्यास की सेठानी नर्मदाबेन की यौन-संतुष्टि उनके पति द्वारा नहीं होती, बल्कि वह उसके लिए समर्थ भी नहीं है, क्योंकि जवानी में अति-विलासी जीवन जीने के कारण उनके खाते में "पुरुषत्व क्रेडिट" धन अब "बैलेंस" "निल" हो चुका है। अतः सेठ ही सेठानी के लिए इस प्रकार की व्यवस्था कर देते हैं। सेठ मंदिर बनवाते हैं तो सेठानी पुजारी अपनी तबियत का रखती हैं।[50] "कबूतरखाना" में भुलेश्वर की सेठानियों का चरित्र भी इसी प्रकार का है। प्रसादजी ने "कंकाल" में इसी अभिजात वर्ग की पोल खोली है। "प्रेम अपवित्र नदी" (लक्ष्मीनारायण लाल) में दिल्ली के कपूरवाला परिवार की कुछ बातें बतायी गयी हैं जो इस प्रवृत्ति की ओर संकेत करती है। उस परिवार में एक ऐसा रिवाज धर्म के नाम पर चल रहा है, जो वस्तुतः अनैतिक है। परिवार की नव-वधू को हरद्वार के उनके पुश्तैनी पंडे को एक बार दान की जाती है, फिर दूसरे दिन वह उसे लौटा देती है। "इमरतिया" के "जमनिया मठ" में निःसंतान स्त्रियों का एक आश्रम चलता है। संतान-प्राप्ति की इच्छा रखने वाली अच्छे-अच्छे घरों की स्त्रियां इस आश्रम में आकर कुछ महीनें ठहर जाती है। उनके साथ महन्त, पुजारी, साधु-महात्मा सभी यौन-कर्म करते हैं और इनमें से किसी-न-किसी का गर्भ उनको ठहर ही जाता है। वस्तुतः इसमें दोनों पक्ष की मिलीभगत होती है। धर्म की आड़ में यदि यौन-संतुष्टि होती रहे तो उसमें बुराई ही क्या है? (!)

राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याओं को हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं — /1/ राजनीतिक लोगों से जुड़ी हुई महिलाएं, /2/ राजनीति के लिए प्रयुक्त महिलाएं, /3/ राजनीतिक पार्टियों से ~~हुइ हुई~~ जुड़ी हुई महिलाएं।

/1/ राजनीतिक लोगों से जुड़ी हुई महिलाएं :

कुछ राजनीतिक नेता बड़े रंगीन तबियत के होते हैं। पत्नी के अतिरिक्त तफरीह केलिए या बौद्धिक थकावट को दूर करने के लिए या राजनीतिक टेन्शन को दूर करने के लिए कुछ सुंदर महिलाओं को आश्रय देते हैं। अभी कुछ दिन पहले कल्याणसिंह, राजनाथसिंह, कलराज मिश्रा आदि के साथ जो महिलाएं जुड़ी हुई हैं उनका विस्तृत हेवाल सभी दैनिक पत्रों में आया था। "मुक्तिबोध" की नीलिमा सहायबाबू की मित्र है। और मित्रता बहुत ही घनिष्ठ प्रकार की है। जैनेन्द्र के उपन्यासों में प्रायः राजनीतिक लोगों के साथ कुछ अन्य महिलाएं जुड़ी हुई मिलती है। व्यंग्यात्मक भाषा में वे लोग उसे "स्पेर-व्हिल" कहते हैं। "~~क्ल~~ कल्याणी", "सुखदा", "व्यतीत", "जयवर्द्धन" आदि उनके सभी उपन्यासों में ~~इस~~ इस ~~प्रवृत्ति~~ प्रवृत्ति को लक्षित किया जा सकता है। "प्रश्न और मरीचिका" की रूपा आण्टी भी इसका एक ज्वलंत उदाहरण हैं। "इमरतिया" में जो महिलाएं हैं और जो साधुआइनें हैं उनका उपयोग राजनीतिके लोग करते ही हैं। इसलिए राजनीति वाले इस प्रकार की संस्थाओं को प्रश्रय देते हैं।

/2/ राजनीति के लिए प्रयुक्त महिलाएं :

इनको हम राजनीतिक "विषकन्याएं" कह सकते हैं। राजनीति में कई बार अपने प्रतिस्पर्द्धियों से निबटने के लिए इस शस्त्र का प्रयोग किया जाता है। "आखिरी सलाम" में बताया गया है कि चन्द्रगुप्त के दरबार में "मदनिका" नामक एक गणिका है। चाणक्य चन्द्रगुप्त को सलाह देते हैं कि अपने प्रतिस्पर्द्धी पर्वतक को खत्म करने के लिए

उसके पास किसी तरह से मदनिका को भेजना ही होगा । [5] आजकल तो किसीकी राजनीतकि "करियर" को चौपट करने के लिए "सीड़ी" का प्रयोग चला है । पर इस सीड़ी को उतारने के लिए तो किसी-न-किसी को विषकन्या §9§ बनाया ही जाता है । आज से लगभग तीस-चालीस साल पहले डा. वार्ड नामक व्यक्ति ने "क्रिस्टाइन किलर" नामक एक विश्व-सुंदरी का प्रयोग विश्व के बड़े-बड़े मांधाताओं को अपनी मुट्ठी में करने के लिए किया था । उसने प्रत्येक कक्ष में छिपे ऑटोमेटिक कैमरे रख दिए थे ।

/3/ राजनीतिक पार्टियों से जुड़ी हुई महिलाएं :

कई महत्त्वाकांक्षी महिलाएं राजनीति में ऊपर आने के लिए, महत्त्वपूर्ण स्थानों और ओहदों को पाने के लिए अपने शरीर और सौन्दर्य का प्रयोग करती हैं । "अल्मा कबूतरी" की अल्मा, "प्रश्न और मरीचिका" की रूपा आन्टी, "सुखदा" की सुखदा, "नदी नहीं मुड़ती " की सुषमा, "जयवर्द्धन" की एलिजाबेथ, "मुक्ति-बोध" की तमारा आदि इसके उदाहरण हैं ।

§ख§ वेश्या-जीवन की प्रमुख समस्याएं :

प्रस्तुत अध्याय के प्रथम संभाग में हमने विश्लेषण के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियों और प्रकारों पर सोदाहरण विचार किया । अब इस संभाग में उपर्युक्त शीर्षक के अन्तर्गत हम उनके जीवन की प्रमुख समस्याओं पर विचार करेंगे । ये समस्याएं कई प्रकार की हैं, जैसे — /1/ आर्थिक, /2/ पारिवारिक, /3/ सामाजिक, /4/ शारीरिक, /5/ काम-कुण्ठा जनित, /6/ शैक्षिक, /7/ मनोवैज्ञानिक, /8/ वैधानिक या कानूनी । अब क्रमशः उन पर विचार करने का हमारा उपक्रम रहेगा ।

विषय-उपक्रम के पूर्व यहां भी एक मुद्दा स्पष्ट करना आवश्यक है कि हमने अपनी सुविधा के लिए वेश्याओं की समस्याओं को विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है । परन्तु ये समस्याएं परस्पर अनुस्यूत होती है, जैसे आर्थिक समस्या पारिवारिक या सामाजिक समस्या से कई बार जुड़ी हुई होती है । शारीरिक के साथ भी उसका सम्बन्ध कई बार होता है । शैक्षिक समस्या आर्थिक और सामाजिक से भी जुड़ी हुई रहती है । कई मनोवैज्ञानिक समस्याओं का उत्स ज्ञान का अभाव होता है, या जानकारी का अभाव होता है । अतः इन सबमें एक प्रकार का लचीलापन [Flexibility] है, इस मुद्दे को नज़रअन्दाज़ करने से काम नहीं चल सकता है ।

/1/ आर्थिक समस्याएं :

आर्थिक समस्या तो लगभग हर व्यक्ति, समाज, देश, संस्था, प्रतिष्ठान आदि की मुख्य समस्या है । कोई व्यक्ति शायद ही मिले जिसे अर्थ की समस्या न सताती हो । संसार में रहकर "अर्थ" की ओर से मुंह नहीं मोड़ सकते । वेश्याओं के संदर्भ में इस समस्या के दो आयाम हमारे सामने आते हैं । प्रथम यह कि आर्थिक समस्या के कारण ही कोई स्त्री वेश्याजीवन की ओर उन्मुख होती है । इसमें प्रकट-अप्रकट दोनों समूह की वेश्याएं आ जाती हैं । हमारे आलोच्य उपन्यासों में से अधिकांश उपन्यासों में वेश्या के उद्भव का यही कारण है । "सेवासदन" का गधाधर यदि अच्छा कमाता-खाता, संपन्न होता तो सुमन तो कदाचित वेश्या न बनती । यद्यपि सुमन को उस पथ पर ले जाने वाले और भी कई कारण है, और जिनकी चर्चा प्रेमचंदजी ने की है, किन्तु मुख्य समस्या तो अर्थ की ही है । अर्थाभाव के कारण ही सुमन का ब्याह गदाधर जैसे अपात्र व्यक्ति से होता । यदि सुमन की माँ के पास पर्याप्त धन होता, बेटी के ब्याह में दहेज देने के लिए तो उसका ब्याह गदाधर से कदापि न होता । वहीं से सुमन के

के मन में अतृप्ति ~~का एक बीज~~ पड़ जाता है । यहां एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि कोई भी लड़की अपनी इच्छा से, अपने मन से, वेश्या होती नहीं है । उसे वेश्या होना पड़ता है और उसमें "अर्थाभाव" एक बहुत बड़ा कारण है । "सलाम आखिरी" की लगभग तमाम-तमाम वेश्याएं जो इस क्षेत्र में आई हैं, उसके मूल में भूख और गरीबी है । मीना अपने भाई-बहनों के मुंह में कौर दे सके इसलिए कलकत्ता आयी थी । उसे नौकरी देने के बहाने से शहर में लाया जाता है और फिर वेश्याबाजार में बेच दिया जाता है । यही कहानी नलिनी की है, नूरी की है ।[52]

यह तो हुआ समस्या का एक पक्ष । वेश्या होने के बाद भी उनको आर्थिक चिन्ताओं से कोई नजात तो नहीं मिलती है । मालकिन, कमरे का किराया, दलाल, पुलिस के हफ्ते इन सबको निकालने के बाद उसके पास अपनी कमाई का बहुत छोटा हिस्सा रह जाता है । अतः कई बार उनको मालकिन से कर्ज भी लेना पड़ता है, जिसका भी भारी सूद इनको चुकाना पड़ता है । [53] दूसरे कई बार उनको अपने गांव, अपने मां-बाप तथा भाई-बहनों के लिए भी निश्चित रकम भेजनी पड़ती है । मीना मैडम के चकले की वेश्या रमा प्रतिमास अपने गांव एक हजार रुपये भेजती है, यह कहकर कि वह किसी कारखाने में काम करती है । [54] गंदे-आवासों में रहने के कारण हारी-बिमारी भी लगी रहती है, जिसके इलाज में भी काफी रकम खर्च करनी पड़ती है । पैसों की कमी के कारण पिन्की के कमरे का लाईट-कनेक्शन भी कट गया है । पैसों की तंगी के कारण ही वह किसी सस्ते ऊंट-वैद्य टाईप डाक्टर से "अबार्शन" करवाती है, जिसमें उसकी जान तक चली जाती है । [55]

वेश्या-जीवन में उम्र का भी बड़ा महत्व है । बुढ़ापे में ग्राहक नहीं मिलते । जिस प्रकार का जीवन वे जीती हैं उसमें पैंतीस-चालीस के बाद से वेश्याओं की उम्र ढलने लगती है । मीना मैडम के यहां अधिया-सिस्टम पर काम करने वाली रमा की मुख्य चिन्ता यह है

कि ढलती उम्र में ग्राहक न मिलने के कारण कहीं मैडम ने उसे निकाल दिया तो उसका क्या होगा । रेशमी को उसकी मालकिन निकाल देती है तो उसे भीख मांगने की नौबत आ जाती है और अन्ततः कलकत्ते के फुटपाथ पर ही गुमनामी की जिन्दगी जीते हुए उसकी मौत होती है । 56 इस पर सुकीर्ति की टिप्पणी है : "आधी से ज्यादा गरीब वेश्याओं का भाग्य ऐसा ही होता है । चालीस-पैंतालीस तक कई मर-खुरा जाती हैं या अपंग या सड़-गल जाती हैं । यदि यह न हुआ तो पागल या भिखारिन ही बन जाती है ।" 57 "चम्पाकली" उपन्यास की चम्पाकली भी दिल्ली की गलियों में भीख मांगते हुए दम तोड़ देती है । "मुरदाघर" की मैना, मरियम, पार्वती, बशीरन आदि वेश्याओं की स्थिति तो यह है कि यदि किसी दिन ग्राहक न मिले तो इनके यहां खाने तक के लाले पड़ जाते हैं । बशीरन मैना के साथ "मुरदाघर" में पोपट (मैना का फर्जी पति) की लाश देखने आयी है । ध्यान रहे, लाश लेने नहीं, क्योंकि मुर्दागाड़ी के लिए तथा पोपट के अग्नि-संस्कार के लिए उनके पास पैसे नहीं है ।" खाकी वाले को ... समझा रही है बशीरन । ... भैया ! हम लोग भौत गरीब लोक हैं । ... तुम इसका ठीक काम करवादेंगा ? ... अल्ला तुम्हारा भला करेंगा । ... भौत मेरबानी होंगा तुम्हारा । ... भौत दुआ देंगा हम लोक । ... सच्ची बोलता ..." 58 बशीरन को वापस लौटने की जल्दी है, क्योंकि जल्दी जाकर वह कोई ग्राहक निपटायेगी तभी उसको खाना नसीब होगा । 59 इन वेश्याओं के बच्चे - लड़के कुत्तों की तरह होटल के पिछवाड़े डाले गए कचरे के डिब्बों पर टूट पड़ते हैं —" छोटे लड़के मार रहे पत्थर कुत्तों को ... हटते नहीं कुत्ते । ... कौए भी जुट जाते हैं । कुछ नहीं मिलता जल्दी में । ... मम्मद कुछ मिला रे ? ... इधर कुछ भी नईं । उधर ? ... उधर भी नहीं । हटाते जाओ जल्दी -जल्दी । कुछ नईं । हां ! एक मच्छी आधी खायी हुई । अचानक दिख जाती है । ... दौड़ पड़ते हैं सब । ... तेरी मां की ... हट रे साला ... तू हट साला

भैनचोद ! ... र ... उसकू पकड़ तो । मैं ढूंढके निकाला । हाथ नई लगाना गांडू । ऐसा मारेंगा ।" 60 इससे इनकी भीषण गरीबी का पता चलता है । ये वेश्याएं दो-दो पांच-पांच रूपये में जिस्मफरोशी का काम करती हैं । इनकी तुलना में सोनागाछी की वेश्याओं की स्थिति थोड़ी अच्छी है, क्योंकि इनका "रेट" कम-से-कम बीस रूपया तो होता ही है । खैर समय भी काफी बीत गया । "मुरदा-घर" 1974 ई. की रचना है और "सलाम आखिरी" सन् 2002 ई. की । इस बीच रूपये का अवमूल्यन भी तो काफी हुआ है ।

/2/ पारिवारिक समस्याएं :

वेश्याओं के संदर्भ में यह भी द्विआयामी समस्या है । कई बार पारिवारिक कारणों से किसी लड़की या स्त्री को वेश्या होना पड़ता है और वेश्याओं की अपनी पारिवारिक समस्याएं भी होती हैं । "सलाम आखिरी " की मीना, नलिनी, नूरी , गायत्री, चन्द्रिका, श्रावणी आदि वेश्याएं पारिवारिक कारणों से ही वेश्या बनी हैं । अपने परिवार, माँ-बाप, भाई-बहन आदि को भुखमरी की किल्लत से बचाने के लिए ही उन्होंने अपने सर्वस्व को दांव पर लगाया है । किन्तु समस्या का दूसरा पहलू यह भी है कि जिन लोगों के कारण वह यह सब करती हैं, उनको वह ये सब नहीं बता सकती है । अपनी इज्जत-अस्मत को दांव पर लगा देने वाली, बल्कि इज्जत-आबरू को जिसने बेच खाया है और जो भयंकर रूप से निर्लज्ज और बेहया हो गई है, ऐसी वेश्या के मन में भी एक डर बराबर बना रहता है कि कहीं उसके पेशे का राज उनके घरवालों के आगे उजागर न हो जाए । "सलाम आखिरी" की रमा कहती है कि यदि उनके घरवालों को पता चल जाए कि वह कैसे कारखाने में काम कर रही है, तो उसका मुंह तक न देखें ।61 इसी उपन्यास की गायत्री एक फ्लाइंग वेश्या है । कलकत्ता के पास के ही गांव मागराघाट से वह आती है । उसने अपनी सास को यह

बता रखा है कि दो-चार अच्छे घरों में वह कपड़ा-बर्तन-खाना का काम करती है ।[62] इसी उपन्यास की "माया देवनार" का तो अपना चकला है, पर इस हकीकत को उसने अपने गांव में छिपाकर रखा है, क्योंकि यदि एक बार समाज में यह बात फैल जाए कि फलां-फलां कलकत्ते या कहीं भी वेश्या है तो उस परिवार की कम्बख्ती आ जाती है । "अंधेरी गली का मकान" ﴾ जानकीप्रसाद शर्मा ﴿ का किशोरीलाल गांव से शहर जाकर वेश्यागामी हो जाता है । वह अपनी लड़की का विवाह निश्चित करता है, किन्तु बाद में वह रिश्ता टूट जाता है, क्योंकि समाज में कहीं से यह बात फैल जाती है कि लड़की का बाप शराबी-जुआरी और रण्डीबाज है । तो यह तो पुरुष की बात है । उसके स्थान पर यदि कोई स्त्री हो तो स्थिति और भी खराब हो जाती है । "सेवासदन" की सुमन की बहन शांता की बारात वापस चली जाती है, क्योंकि कोई यह बता देता है कि लड़की की बहन सुमन बनारस के कोठे की वेश्या है । इस आघात में सुमन के पिता गंगा में डूबकर आत्महत्या कर लेते हैं । इसे एक बहुत बड़ी पारिवारिक विडम्बना ही कहना चाहिए कि जिन लोगों के मुंह में निवाला देने के लिए वह यह सब घिनौना काम करती है, इतनी बड़ी कुरबानी देती है, उनको भी खुलकर वह अपनी वेदना नहीं बता सकती । "नावें" ﴾शशिप्रभा शास्त्री ﴿ की मालती सोमजी नामक उद्योगपति की "रखैल" है । मालती के पिता रिटायर्ड हो गए हैं और घर का पूरा निर्वाह मालती की कमाई पर चल रहा है । घरवालों को मालती की कमाई से मतलब है । वह कहां जाती है, क्या करती है, कई-कई दिनों तक गायब क्यों रहती है, इन सब बातों से उनको कोई मतलब नहीं है । और मालती भी बिन्दास्त होकर घूम रही है । उसे समाज की कोई परवाह नहीं है, किन्तु जब उसे गर्भx गर्भ ठहर जाता है, तब उसका मोहभंग होता है । सोमजी उसे बतौर ﴾" रखैल" रखने को तैयार है, किन्तु वे उसे विवाहिता का दर्जा दे नहीं सकते । दूसरी ओर मालती को पूरा विश्वास था कि उसके

घर-परिवार वाले उसे अपना लेंगे , परन्तु सामाजिक बदनामी के डर से वे भी उसे छोड़ देते हैं । वेश्या के सम्मुख अपने मां-बाप , भाई-बहन आदि की तो समस्या है , किन्तु उसके अपने परिवार की समस्या भी रात-दिन उसे सताती है । माया देवनार अपनी पुत्री को पढ़ा-लिखाकर कुछ बनाना चाहती है । इसलिए वह गांव में अपनी स्थिति के बारे में किसीको नहीं बताती , पर एकदिन उसकी लड़की पता पूछते-पूछते उसके अड्डे पहुंच जाती है और बदकिस्मती से वह वहां नहीं थी , उसमें उससे जलने वाली वेश्याएं उसकी लड़की को जबरन वेश्या बना ही देते हैं । पिन्की को वेश्यावृत्ति विरासत में प्राप्त है , पर वह अपनी लड़की को वेश्या नहीं बनाना चाहती । किन्तु असामयिक निधन के कारण उसे , मलका को , वेश्या के कोठे पर बैठना ही पड़ता है । पिन्की को अपने लड़के राजा की भी चिन्ता थी । उसने कभी सुकीर्ति को उसके संदर्भ में बताया था कि वह उसे किसी स्कूल में भर्ती करवाना चाहती है । सुकीर्ति अपने मित्र विजय को इस बाबत सहायता करने की बात करती है । विजय अपने एक पादरी मित्र को उसकी स्कूल में दाखिला देने के लिए कहता है , किन्तु उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि जानने पर वह साफ इन्कार कर जाता है । [63] "मुरदाघर" की मैना भी निरंतर अपने बेटे राजू के भविष्य के लिए चिन्तित रहती है ।

/3/ सामाजिक समस्याएँ :

पारिवारिक समस्या के समान सामाजिक समस्या भी द्विमुखी है । किसी लड़की को या स्त्री को वेश्या बनाने के पीछे सामाजिक कारण भी उतने ही जिम्मेवार हैं , जितने कि आर्थिक वा पारिवारिक । कई बार तो देखा गया है कि समाज के क्रूर व जड़ नियम ही स्त्री को वेश्यावृत्ति के पेशे में धकेलती हैं । वेश्या के यहां कौन नहीं जाता ? समाज के सभी इज्जतदार लोग , नेता , समाज-सुधारक , पण्डे-पुरोहित सभी तो उसके यहां जाते हैं । [64]

वेश्या को भोगने के लिए पूरा समाज तैयार है । परन्तु कोई माँ का लाल ऐसा पैदा नहीं होता , जो किसी वेश्या को अपनाकर उसका हौसला बढ़ावे , या उसकी इज्जत बढ़ावे । हमारे समाज के मापदण्ड स्त्री और पुरुष के लिए अलग-अलग है । पुरुष का कितना भी चारित्रिक पतन हुआ हो , वह कितना ही दुष्ट , नीच या निकम्मा हो ; कोई उसे दोषित नहीं ठहराता । सारा दोष वेश्याओं के ही मत्थे मढ़ा जाता है । पुरुष तो तांबे-पित्तल-स्टील के बर्तन जैसा है , जिसे मांजकर पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है ; किन्तु स्त्रियों के संदर्भx संदर्भ में ऐसा नहीं है । वह तो मिट्टी का भांडा है , एक बार भ जूठा हुआ तो उसे पुनः पवित्र नहीं बनाया जा सकता । मधु कांकरिया के उपन्यास "सलाम आखिरी" के में एक अध्याय का शीर्षक है —" वन्स ए प्रोस्टिट्यूट , आलवेज ए प्रोस्टिट्यूट ।" [65] स्त्रियों की या वेश्याओं की अपनी भी वही मानसिकता है कि एक बार जो लड़की बिगड़ गई , तो हमेशा के लिए बिगड़ गई । उसका फिर कुछ हो ही नहीं सकता । वेश्याएं हैं भी "हम बिगड़ गई हैं " की तोता-रटन्त लगाती रहती है । किन्तु उनकी इस मानसिकता के पीछे हमारा सामाजिक चिंतन ही उत्तरदायी है । इन्द्राणी दी अफसाना और आइशा नामक दो बांग्ला देश की लड़कियों को वेश्या होने से बचा लेती है । इन्द्राणी दी की बातचीत उन बच्चियों के मां-बाप से चल रही थी और वे उन्हें रख लेने के लिए राजी हो गए थे । इस संदर्भ में सुकीर्ति इन्द्राणी दी को पूछती है —" तो क्या मां-बाप उन्हें वापस पाने के लिए राजी नहीं भी हो सकते हैं ?" इसके उत्तर में इन्द्राणी दी जो कहती है वह बड़ा ही चिन्ताजनक है —" हां , कई जगह , छोटी जगहों पर बात के बहुत फैल जाने पर सामाजिक डर के चलते भी मां-बाप वेश्या बन चुकी अपनी लड़की को वापस नहीं ले पाते हैं कि यदि ऐसा किया तो उनके बाकी बच्चों का भविष्य , शादी-ब्याह दांव पर लग जाएंगे । लोगों के कटाक्ष , ताने उनका जीना हराम कर देंगे ।" [66] इस पर सुकीर्ति जब दूसरा प्रश्न करती है —

" पर ये दोनों तो वेश्याएं नहीं बनायी गई थी ?" तो इन्द्राणी दी कहतीं हैं —" वे दोनों वेश्यालयों से लायी गई थीं । और फिर अफसाना को तो छोड़ा नहीं था उस चुड़ैल ने । उसने कोर्ट में बताया था कि जिस रात वे लोग पहुंचे , उसी रात उसकी मैडम ने (चकले की मालकिन ने) जबर्दस्ती एक ग्राहक को उसके कमरे में घुसा दिया था ।" 67 शायद उक्त घटना में मां-बाप लड़कियों को वापस लेने के लिए राजी हो गए थे , क्योंकि मामला दूसरे देश का था । दूर का था । और लड़कियों की खाला उनको शहर ले गयी थी , यह बात पास-पड़ोस और समाज वालों को मालूम थी । अतः लड़कियों के वापस आने पर कोई खास बवाल होने की संभावना नहीं थी । "उमरावजान अदा" में भी हम इसी बात को लक्षित कर सकते हैं । "सलाम आखिरी" में एक स्थान पर कहा गया है —" सदियों से चला आ रहा वेश्या शब्द "धरती की सबसे बुरी औरत का रूपान्तर" एक ऐसी औरत के रूप में हो चुका था जो किसीके लिए "यूज एण्ड थ्रो" , किसीके लिए "उगालदान" , किसीकेलिए "टाइम पास " — किसीके लिए "चूसा और थूका मार्का च्युंगम " तो किसीके लिए "गिनी पिग थी ।" 68

/4/ शारीरिक समस्याएं :

वेश्याओं को अनेक प्रकार की शारीरिक समस्याओं से भी जूझना पड़ता है । गंदे निवासों के कारण उनको तरह-तरह तरह की शारीरिक बिमारियां तो होती ही रहती हैं । इनके इलाज के लिए उनके पास पैसे भी नहीं होते हैं । उनके सामने अपने शरीर के जल्दी ढल जाने का खतरा भी रहता है , क्योंकि यौन-अंगों को यंत्र की तरह इस्तेमाल करने के कारण अन्ततोगत्वा वे भी जवाब दे देते हैं । उन यंत्रों की तो नियमित "ओइलिंग" वगैरह भी होती रहती है , यहां तो इनकी ठीक से सफाई तक नहीं होती है । फलतः वे जल्दी ही बुढ़ापे की ओर सरकने लगती हैं । यद्यपि बुढ़ापा

तो बुढ़ापा है, वह किसीको अच्छा नहीं लगता है, पर उसका भी आना तो निश्चित ही है। अनाहूत मेहमान की तरह वह आ ही जाता है। मेरे निर्देशक महोदय का एक शेर स्मृति में तैर रहा है —

अच्छा किया
"गुज़ारा पा ही दिया बुढ़ापा
आधा या पौना देते तो क्या होता।" 69

तो यह बुढ़ापा तो कमोबेश रूप में सबके लिए बुरा होता है, परन्तु वेश्याओं के लिए बुढ़ापा रौरव-नरक से कम नहीं होता। मीना मैडम (सलाम आखिरी) की तरह बहुत कम भाग्यशाली वेश्याएं होती हैं, जिनका बुढ़ापा चैन से कट सकता है, क्योंकि इन्होंने समय रहते अपनी व्यवस्था कर ली होती है। किन्तु पिन्की जैसी कई वेश्याएं होती हैं जिनके पास भविष्य-निधि के नाम पर कुछ भी नहीं होता। अन्ततः उनको दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। भीख माँगकर गुजारा करना पड़ता है। "त्यागपत्र", "नदी फिर बह चली", "कबूतरखाना", "मुरदाघर", "सलाम आखिरी" आदि कई उपन्यासों में हमें उनकी दयनीय जिन्दगी के चित्र मिलते हैं।

दूसरे वेश्याओं को अनेक प्रकार के चर्मरोग या कुष्ठरोग होते हैं। अनेक वेश्याएं अपने अंतिम दिनों में इन रोगों से पीड़ित होकर बड़ी ही दर्दनाक स्थितियों से गुजरती हैं।

तीसरे वेश्याओं को अनेक प्रकार के वी.डी. अर्थात् गुप्त-रोग या यौन-रोग होते हैं, जैसे सिफीलीस, गनोरिया और अब एइड्स। वैसे तो अब ग्राहक भी जागरूक हो गए हैं। सरकार की ओर से भी वेश्याओं को "निरोध" (कोन्डोम - वेश्याओं की अपनी भाषा में "टोपी") आदि दिए जाते हैं; तथापि कई बार ऐसे ग्राहक आ जाते हैं जिनको निरोध धारण करना एक झंझट का काम लगता है, दूसरे ग्राहकों के अभाव में वेश्या भी मिला हुआ ग्राहक छोड़ना नहीं चाहती। इन स्थितियों में वेश्याओं को इस प्रकार की बिमारियाँ प्रायः हो जाती हैं और उनके संपर्क से ग्राहकों को

होती हैं, और फिर ग्राहकों से वेश्याओं को, इस प्रकार यह विष-चक्र चलता ही रहता है। वैसे "एड्स" होने के और भी कई कारण हैं, किन्तु जब कोई एच.आई.वी. पोजीटिव पाया जाता है, तो लोगों को पहली आशंका यही होती है कि वह वेश्यागामी होगा, और स्त्री है तो वह जरूर चरित्रहीन होगी। इसके कारण बहुत-से लोग इस बिमारी को छिपाते भी हैं। इसके कारण कई परिवार वाले तो उनको घर से निकाल भी देते हैं और सामाजिक-बहिष्कार की भीषण विभीषिका से उन्हें गुजरना पड़ता है।

निरोध का उपयोग न करने के कारण वेश्याओं को रोग भी होते हैं और कई बार उनको अवांछित गर्भ भी रह जाता है। "अबोर्शन" के लिए उनके पास पैसे तो होते नहीं है, फलतः वे ऊंट-वैदों का सहारा लेती हैं, जिसके कारण उनकी जान तक जा सकती है। "सलाम आखिरी" की पिन्की की मौत इसमें होती है।[70]

ऊपर निर्दिष्ट किया गया है कि निरोध न पहनने के कारण कई बार वेश्याओं को "एड्स" हो जाता है। "सलाम आखिरी" की माया देवनार एच.आई.वी. पोजिटीव है। उसके लिए ही वह अस्पताल गई थी और उसकी उस अनुपस्थिति में उसकी बेटी विशाखा को जबरन वेश्या बना दिया जाता है। तब माया, जिसने अनेक लड़कियों को "छिकुरिया" (बाल-वेश्या) बनाया था, रणचण्डी का रूप धारण कर लेती हैं और गण्डासा उठाकर उस ग्राहक की गरदन उड़ा देती है जिसने उसकी बेटी पर बलात्कार किया था।[71] इसी उपन्यास की एक वेश्या रेशमी को भी पता है कि वह "एच.आई.वी." पोजीटिव है, किन्तु वह अपना इलाज नहीं करवाना चाहती है, क्योंकि इस बिमारी को अपना औजार बनाकर समग्र पुरुष जाति से वह उसका बदला लेना चाहती है। लेखिका के शब्दों में वह "अग्निकन्या" बन चुकी है।[72] परन्तु उसकी यह इच्छा पूरी नहीं होती है, क्योंकि उसकी मालकिन को इस बात का पता चल जाता है तो वह उसे निकाल देती है। जीवन

के अन्तिम दिनों में सड़ी-गली हालत में भीख मांगते हुए फुटपाथ पर उसकी मौत होती है । "हिन्दू सत्कार समिति की गाड़ी उसकी मृत-देह को उठाकर ले गई थी ।" [73] इस तरह की घटनाओं के संदर्भ में लेखिका ने सुकीर्ति के माध्यम से एक स्थान पर लिखा है : "सुकीर्ति को याद आ रहा था, किसी रूसी लेखक की पुस्तक में उसने पढ़ा था कि एक बार जर्मनी द्वारा फ्रान्स पर कब्जा कर लेने पर जर्मन सैनिक खुलकर शहरों पर अत्याचार करने लगे थे । खलिहान जलाना, खजानों को लूटते जाना के साथ-साथ वे वहां की स्त्रियों पर बलात्कार भी करने लगे थे । इन्हीं बलात्कारों के चलते एक फ्रान्सीसी युवती को सिफलिस हो गई थी । बाद में जर्मन सैनिकों से प्रतिशोध लेने के लिए वह वेश्या हो गई थी और हजारों जर्मन सैनिकों को उसने इस रोग का रोगी बनाकर अपने ढंग से अपने साथ समस्त स्त्री जाति के अपमान का बदला लिया था ।" [74]

/5/ काम-कुण्ठा जनित समस्याएं :

काम-जनित कुण्ठाओं के कारण कई स्त्रियां "निम्फो" हो जाती है जिसका जिक्र पूर्ववर्ती पृष्ठों में अनेक बार किया गया है । ऐसी स्त्रियां एक तरह से वेश्यानुमा जिन्दगी जीने लगती हैं । ऐसी वेश्याएं प्रकट-अप्रकट दोनों समूहों में पायी जाती है । प्रकट समूह की बात करें तो "सलाम आखिरी" की माया देवनार, "मछली मरी हुई" की कल्याणी, "छाया मत छूना मन" की कंचन, "जनानी सवारियां" की कुछेक वेश्याएं जो यौन-अतृप्ति के कारण दलालों के जाल में फंसकर वेश्याएं बनी हैं, आदि इस प्रकार की वेश्याएं हैं । कई बार वेश्या का पेशा इसलिए उन्हें आशीर्वादरूप लगता है । अप्रकट समूह में ग्रामीण क्षेत्र की ऐसी वेश्याओं में डलवा (जल टूटता हुआ" (चेनइया (सूखता हुआ तालाब (, "फुलिया की मां " (मैला आंचल " (, "प्यारी की मां " (कब तक पुकारूं (आदि की गणना कर सकते हैं । अप्रकट-समूह में नगरीय क्षेत्र में "पतझर की

आवाज़ें" की उषा , "चिड़ियाघर" की मिसेज रिज़वी , "रेखा" की रेखा , "रेखा " की मिसेज चावला , "बैसाखियोंवाली इमारत" की मिस जायसवाल , "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदा , "कबूतरखाना" की कई सेठानियाँ , "सलाम आखिरी" में संपन्न-कुलीन परिवारों की इक्के महिलाएं , "रामकली" की रामकली आदि की गणना हम कर सकते हैं । इनके अतिरिक्त "इमरतिया" की गौरी , "मित्रो मरजानी" में मित्रो की माँ आदि का उल्लेख भी कर सकते हैं ।

§6§ शैक्षिक समस्याएं :

आलोच्य उपन्यासों पर एक दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि लगभग 90 प्रतिशत अधिकतर× वेश्याएं अशिक्षित होती हैं । अतः उनकी सोच बहुत ही सीमित होती है । "हम सब खराब हो चुकी हैं " की एक ही "तोता रटन्त " उनसे सुनाई पड़ती है । इससे आगे वे सोच ही नहीं सकती है । अशिक्षा के कारण उनका आर्थिक शोषण भी काफी होता है । "अधिया सिस्टम " के अन्तर्गत मालकिनें उनका खूब शोषण करती हैं । आखिरी सलाम" की मीना मैडम तो अच्छी हैं , सहृदय हैं , कोमल हैं , सहानुभूतिपूर्ण हैं किन्तु सभी तो ऐसी नहीं होती है । जीवन की तल्खियों ने उनको काफी क्रूर और कठोर बना दिया होता है । इसी उपन्यास में बताया गया है कि कई बार वेश्याओं को अपनी मालकिनों से कर्ज भी लेना पड़ता है उसका बड़ा तगड़ा ब्याज उनको चुकाना पड़ता है । अशिक्षा×के×कारण× अशिक्षा के कारण उनको हिसाब-किताब करना भी आता नहीं है , फलतः उनका काफी आर्थिक शोषण होता रहता है ।

इस पक्ष का दूसरा पहलू यह है कि वेश्याएं स्वयं तो अशिक्षित होती हैं , उनकी संतानों को भी अशिक्षित रहना पड़ता है । "मुरदाघर" में जो परिवेश चित्रित है , उससे उनके बच्चों का पता चलता है । इनमें से किसीने कभी स्कूल का मुंह तक नहीं देखा है । वेश्याओं की

जो आर्थिक स्थिति है, उसे देखते हुए, बच्चों को पढ़ाने की बात तो बहुत दूर की चीज है। ऐसे गन्दे माहौल के कारण वे बच्चे दिन-रात गाली-गलौज करते रहते हैं, होटलों के कचरे में खाना ढूंढते रहते हैं, विश्व की युनिवर्सिटी में वे चोर-उचक्के, उठाइगिर, सौदा उठाना ﴾जेब काटना﴿, अपनी मांओं-बहनों के लिए भड़वागिरी करना, ये ही पाठ सिखते रहते हैं। वेश्याओं की लड़कियां प्रायः वेश्याएं ही बनती हैं। माया देवनार अपनी लड़की को इस माहौल से दूर रखना चाहती थी। वह गांव में अपनी बेटी विशाखा को रखकर उसे पढ़ाती भी है। लेकिन एक दिन किस्मत की मारी पता पूछते-पूछते अपनी मां के चकले पर पहुंच ही जाती है और माया की अनुपस्थिति में उसे जबर्दस्ती वेश्या बना दिया जाता है। माया शिक्षित होती तो कदाचित संभल भी जाती। बेटी को समझाती कि उस बात को एक दुःस्वप्न की तरह भूल जाए। पर इन सबको तो एक ही गणित मालूम है — खराब हो गई, तो अब वेश्या ही होना होगा। अतः उस व्यक्ति की हत्या करके वह तो जेल चली जाती है और उसकी बेटी विशाखा मां का चकला संभाल लेती है। [75] सुकीर्ति के कहने पर विजय पिन्की के लड़के को एक मिशनरी स्कूल में दाखिला दिलवाने की कोशिश करता है। उस स्कूल का प्रिंसिपल पादरी विजय का मित्र था। पर जब उसे मालूम होता है कि वह लड़का राजा पिन्की नामक एक वेश्या का लड़का है वह विजय को साफ मना कर देता है। "जैसे ही लोगों को मालूम पड़ेगा कि यह बच्चा लालबत्ती इलाके से आता है, सारी अंगुलियां मेरी तरफ उठ जायेंगी कि पादरी अवश्य ही इन इलाकों में जाता होगा। नो, आई काण्ट डू एनीथिंग दैट गोज़ अगेंस्ट माई इण्टीग्रिटी।" [76] विजय खूब तर्क करता है, यहां तक कि पादरी को हिपोक्रेट तक कह डालता है। पर वह टस से मस नहीं होता। वह विजय से कहता है: "इस दुनिया में गांधी और ईसा भी हण्ड्रेड प्रतिशत स्वीकार नहीं किए गए थे।" [77]

लोग वेश्या को सोसायटी की गटर तो कहते हैं, पर इस गटर को कभी साफ करने की कोशिश तक नहीं करते। जो वेश्याएं हैं उनमें से जो सुधरना चाहती हैं उनको विस्थापित करके सुशिक्षित करके उनको बेहतर जिन्दगी दे सकते हैं, दी जा सकती हैं। पर लोगों ने वेश्या को अनिवार्य "इविल" के रूप में मान्यता दे दी है, बल्कि हमारे नेता, धार्मिक नेता, समाज-सुधारक उनकी नीयत ही इनको सुधारने की नहीं है। सब इस कीचड़ से बचना चाहते हैं। उनके बच्चों को शिक्षित करके "सैकण्ड जनरेशन" को तो सुधारा जा सकता है। पर इस दिशा में कोई कुछ करना ही नहीं चाहते हैं। इन्द्राणी दी का "संलाप" है, पर ऐसी इकल्ली संस्था क्या कर सकती है।

/7/ मनोवैज्ञानिक समस्याएं :

यह समस्या भी द्विमुखी है। समाज के प्रायः लोगों की सोच यह है कि वेश्या की लड़की या लड़के में वंशानुगत दोष पाए जाते हैं और वे लोग कभी भी सभ्य समाज में रह ही नहीं सकते। उनके पास बस एक ही बना-बनाया नीति-वाक्य है : " एक मछली सारे तालाब को गन्दा करती है। " "वंशानुगतता" ~~हेरेडिहरे~~ हेरीडिटरी के नियम को मानें तो भी यह तो मानना होगा कि सभी वेश्याएं जन्मजात नहीं होती। उनमें से कुछेक परिस्थितियों का शिकार होकर प्रथमतः वेश्या बनी हैं। उनके बच्चों में भला वंशानुक्रम के गुण कहां से आयेंगे। "सलाम आखिरी" की मीना, नलिनी, नूरी, रमा, गायत्री आदि वेश्याएं मूलतः गांवों की हैं और उनको बहला-फुसलाकर शहर में ~~ला~~ लाकर जबर्दस्ती वेश्या बनाया गया है। बल्कि इनके अन्तर्मन में तो इस व्यवस्था के प्रति विरोध होगा। वे शरीर से अपवित्र हुई हैं, मन से अपवित्र नहीं है। और बच्चों पर मां के अन्तर्मन का, उसकी आत्मा का ज्यादा असर होगा कि शरीर का। पर लोगों के मानस पर ऐसा गलत डर बैठ गया है कि वे वेश्याओं की संतानों को

अपनी संतानों से इन्हें दूर ही रखना होगा । वेश्याओं में भी मानवोचित गुण होते हैं । इलाचन्द्र जोशी ने "प्रेत और छाया" में वेश्याओं के मानवीय गुणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है : " भारतीय वेश्या के समान क्षमाशील और उदार प्राणी का जोड़ मिलना कठिन है । मैं इस ज्वलंत सत्य पर पर्दा नहीं डालना चाहता कि यथार्थ जगत की बहुत-सी वेश्याएं ऊपर से बड़ी लोभी , संकीर्ण हृदय , मूर्ख और घोर स्वार्थी लगती हैं , पर अगर उनके भी बाहरी जीवन का कड़ा चमड़ा चीरकर देखा जाय तो भीतर स्वस्थ प्रेम और सच्ची करुणा के सैकड़ों सोते फुटते हुए दिखाई देंगे ।" [78]

"पर्दे की रानी" उपन्यास में इलाचन्द्र जोशी ने वेश्या-समस्या के मनोवैज्ञानिक पक्ष को रखा है । उपन्यास की नायिका निरंजना स्वयं वेश्या नहीं है , परन्तु वेश्या-पुत्री होने के कारण उसके मन में जो हीनता-ग्रंथि बन जाती है , उसका निरूपण किया है । ~~xxxxxx~~ किन्तु यहां पर हम इस बात की चर्चा कर रहे हैं कि लोग वेश्या की संतानों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं । निरंजना की मां मनमोहन नामक व्यक्ति के हाथों में अपनी पुत्री सौंप देती है , क्योंकि वह जीवन की अंतिम सांसें गिन रही थी । मनमोहन भी शुरू में तो अपना वादा निभाते हैं और पुत्रीवत् उसका पालन-पोषण करते हैं , किन्तु जैसे ही वह सोलह साल की आयु पार करती है , उसके साथ के उनके व्यवहार में एक अंतर आ जाता है । वे उसे छात्रावास में रखते हैं और अपनी लड़कियों को उसके पास फटकने तक नहीं देते ।[79]

मनमोहन के इस व्यवहार के कारण निरंजना में हीनता-ग्रन्थि का उदय होता है और वह स्वयं वेश्या-पुत्री होने के कारण स्वयं को वेश्या समझने लगती है । एक स्थान पर वह कहती है : "मेरे भीतर वेश्या के संस्कार पूर्ण मात्रा में वर्तमान है । यदि ऐसा न होता तो इन्द्रमोहनजी (मनमोहन का पुत्र) को अपनी भाव-भंगिमा से उस तरह से रिझाने की चेष्टा न करती और उन्हें इच्छानुसार नचाकर अकारण परेशान करने पर उतारू न होती और होटलवाली

घटना और उसके बाद की दुर्घटना का कारण न बनती । निश्चय ही एक वेश्या की मैं अधम लड़की हूं ।"[80]

रांगेय राघव कृत "घरौंदे" उपन्यास की वेश्या नादानी कामेश्वर को सहृदय जानकर उसके सामने अपना दिल खोलती है । पर कामेश्वर उस पर व्यंग्य का चाबुक चला देता है । तब नादानी तिलमिला उठती है और कामेश्वर को खरी-खरी सुनाती है , लेकिन बाद में कुछ नरम पड़ते हुए घिरौरी के स्वर में कहती है —" कामेश्वर , तुम आजकल के पढ़े लिखे आदमी हो , तुम ... तुम भी मुझे नहीं उबार सकते ? बोलो ? जो तुम दोगे वही खाऊंगी , जो दोगे वही पहनूंगी , मगर यह नरक मुझे जीवित में ही मुर्दा किए हुए है , मुझे इससे बाहर ले चलो ... मैं विवाह नहीं चाहती । तुम मुझे रख लो । ... रख लो इसलिए कहा कि मुझमें और विवाहित स्त्री में अधिक फर्क नहीं है ।"[81] किन्तु कामेश्वर देवी मानते हुए भी उसे स्वीकार नहीं कर सकता , क्योंकि उसके अन्तर्मन में भी कहीं यह बैठा हुआ है कि नादानी वेश्या है , उससे मन बहलाया जा सकता है , पर उसे संरक्षण नहीं दिया जा सकता ।

इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास " प्रेत और छाया - " की नंदिनी नामक वेश्या में कुलवधू बनने की प्रबल इच्छा के कारण ही वह भुजौरिया से विवाह करती है । किन्तु भुजौरिया अपनी भुजाओं का सहारा देने के बदले उसे और अंधेरों में ढकेलना चाहता है । केवल आर्थिक लाभ की दृष्टि से ही वह उससे विवाह करता है । दूसरे अर्थों में वह एक सफेदपोश "भड़वा " है । यहां भी भदौरिया की जो सोच है उसके मूल में समाज का ही मनोविज्ञान है ।

कई बार कुछ ग्राहक ऐसे आते हैं जो किसी वेश्या को जी जान से चाहते हैं , पर वहां भी उनका दुर्भाग्य आड़े आता है । "सलाम आखिरी" में एक बहादुर ग्राहक ने एक वेश्या को उड़ाकर ले जाता है । वह उसके साथ घर बसाना चाहता था । तब उसके कटरे की मालकिन दलाल के साथ पहुंच गई । धमकी दे आयी उस

मजनूं को कि तू या तो लौटा दे मेरी छोकरी नहीं तो अपनी बहन को देखेगा तू उसकी भरपाई करते हुए, वेश्या हूं और कइयों को बना चुकी हूं। बहन की खैरियत चाहता है, तो लौटा दे मेरी कबूतरी को। बस, बहन का नाम आते ही उसकी सारी हवा निकल गयी और दूसरे दिन ही उसे लौटा गया।

हमारा समाज बड़ा ही हिपोक्रेट समाज है। एक तरफ दुर्गापूजा में दुर्गा की मूर्ति के लिए वेश्या के कोठे से मिट्टी मंगवाई जायेगी [83] और फिर जी भर के उसको गरियाया जाएगा। उस पर तरह-तरह की कहावतें और लोकोक्तियां बनायी जायेंगी — "वेश्या किसकी जोरू, भड़वा किसका साला"। [84] उपन्यास में समाज के इस मनोविज्ञान पर कुछ चिंतन मिलता है। एक स्थान पर उपन्यास की नायिका (जो एक तरह से लेखिका की "स्पोक-परसन" है) सुकीर्ति सोचती है —" भारतीय समाज का एक और विरोधाभास। जो स्त्री अपने परिवार को भुखमरी से बचाने के लिए अंतिम विकल्प के रूप में अपनी अस्मिता तक को दांव पर लगाने का साहस करती ~~हxx~~ है वह भी बिन सुहाग चिह्नों के अपनी बिरादरी वालों से आंख मिलाने की हिम्मत नहीं बटोर पाती है। भारत की आत्मा, ये ग्रामीण स्त्रियां और भारत के ये गांव जहां आज भी स्त्री का आकलन उसकी जुझारू प्रवृत्ति, उसकी कर्मठता, श्रम और परिवार के लिए किए गए उसके त्याग के आधार पर नहीं होकर उसके सतीत्व के आधार पर ही होता है। शायद यही कारण था कि अमर कथाशिल्पी शरतचन्द्र को कहने की आवश्यकता पड़ गई थी कि नारीत्व सतीत्व से महान है।" [85]

वस्तुतः हमारे यहां चरित्र की व्याख्या को ही बहुत सीमित कर दिया गया है। स्त्रियों में तो चरित्र को सीधे-सीधे सतीत्व से जोड़ दिया गया है, और सतीत्व मने माया, ममता, करुणा, दया, क्षमा नहीं, केवल और केवल योनि-शुचिता। लेखिका ने हजारों-लाखों लोगों की गाढ़े की कमाई को डकार जाने

जाने वाले हर्षद मेहता भैंसाली जैसे लोगों का उदाहरण देकर कहती है — "क्या यह वारांगना चरित्र नहीं ? सुकीर्ति को ताज्जुब होता , जो समाज वेश्याओं को इतनी घिनौनी और तिरस्कार-भरी नजरों से देखता है , उसी समाज की चेतना इन आर्थिक अपराधियों के लिए इतनी भोंथरी क्यों हो जाती है ? उद्योगपति का जामा पहने यह भैंसाली क्या नई वेश्याओं को बाजार में लाने का अपराधी नहीं ? निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों की वह गाढ़ी मेहनत की संचित पूंजी जो बच्चों की शिक्षा या लड़कियों के विवाह के निमित्त अलग से संचित कर रखी गई थी , अब लूट जाने के बाद तन और मन से हताश हुए मां-बाप क्या कर पाएंगे पुत्रियों की शादी ? क्या इन अविवाहित पुत्रियों में से कोई वेश्या नहीं बनेगी ? क्या गारंटी ? आंकड़े और तथ्य बताते हैं कि पंचानबे प्रतिशत वेश्यावृत्ति इस देश में दरिद्रता की कोख से उपजती , पनपती और फलती-फूलती है ।"[86]

आगे लेखिका नायिका सुकीर्ति के माध्यम से प्रश्न उठाती है — "किसका पाप बड़ा ? एक वेश्या का या भैंसाली का ? क्या आर्थिक अपराध दूसरे संगीन अपराधों को जन्म नहीं देते ? फिर भी क्या किसी धर्मगुरु ने किया भैंसाली का सामाजिक बहिष्कार ? वे कर भी नहीं सकते क्योंकि ये सभी धर्मगुरु इस सामाजिक और आध्यात्मिक सौर मंडल के वे चांद-सितारे हैं जो ऐसे उद्योगपतियों और ब्लेक मार्केटियरों की आभा से ही दमकते हैं । ये ही मन्द पड़ जाएं तो वे कैसे दमकेंगे ?"[87]

वेश्या गायत्री का सुकीर्ति को किया गया यह प्रश्न — "आमाके बोलून पाप कि ?" "दो-दो मासूम बच्चे , शराबी नाकारा पति , वृद्ध सास और हर पल खतरे की घंटी बजाते अस्तित्व के बीच किन्हीं कातर , कमजोर क्षणों में अपनी जीवन रेखा को मिटाने से बचाने के लिए अपनाई गई वेश्यावृत्ति क्या पाप है ? या मातृत्व का कोई उच्चतम सोपान ? ... बिना राग , कामना और वासना के किया गया सम्भोग क्या व्यभिचार है ?"[88]

एक तरफ समाज का यह मनोविज्ञान है, तो दूसरी तरफ वेश्याएं भी अनेक प्रकार की मानसिक-मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों से पीड़ित होती हैं। वेश्यावृत्ति नीच, जघन्य और पतित कार्य है ऐसा जहां सभ्य और कुलीन समाज समझता है, ठीक वैसे ही वेश्याएं भी समझती हैं, फलतः उनमें एक प्रकार की हीनता-ग्रन्थि विकसित होती है। यह हीनता-बोध अपराध-बोध (गिल्ट) बनकर उनमें आत्मग्लानि के रूप में प्रकट होता है तो कभी विद्रोह के रूप में। इलाचन्द्रजोशी मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं, अतः अपने उपन्यास "पर्दे की रानी" में उन्होंने यह बताया है कि न केवल वेश्या, अपितु वेश्या-पुत्री में भी इस प्रकार का हीनता-बोध पनपता है। "सलाम आखिरी" में लेखिका ने बताया है कि इस प्रकार का भाव उस वेश्या में होता है जो समाज की क्रूरता या व्यवस्था के कारण वेश्या हुई है। उसकी माता, दादी, परदादी वेश्या नहीं थी। ऐसी वेश्याओं में हीनता-बोध अधिक मात्रा में पाया जाता है। अतः हीनता-बोध से उत्पन्न अन्य प्रकार की विकृत्तियां भी उनमें अधिक मिलती हैं। प्रस्तुत उपन्यास की पिन्की एक बिन्दास्त वेश्या है, उसे जमाने से भी कोई गिला-शिकवा नहीं है, क्योंकि "वेश्यावृत्ति उसे विरासत में मिली है। गायत्री, नूरी, रमा या चम्पा की तरह उसे न तो अपने पेशे से घृणा थी और न ही ग्राहकों पर आक्रोश और न ही जमाने से किसी प्रकार का गिला-शिक्वा और न ही बातचीत में कोई दैन्य भाव।" 89

वेश्याओं की चेतना को कुन्द कर देने वाला यह हीनता-बोध हमारी सामाजिक सोच पर निर्भर है। हम लोग योनि-शुचिता को हद से ज्यादा महत्व देते हैं। इसको हमारी फिल्मों ने भी बढ़ावा दिया है। यदि किसी लड़की पर बलात्कार हुआ है, तो उसके अभिभावक और समाजवाले उसको इतना डाउन कर देते हैं कि वह लड़की अपनी ही नजरों में गिर जाती है। वस्तुतः शर्म लड़की को नहीं उस "रैपिस्ट" को आनी चाहिए, लजाना उस

समाज को चाहिए कि वह अपनी बहन-बेटियों की रक्षा करने में असमर्थ साबित हुआ है । समझ में नहीं आता । लड़की जूठी कैसे हो जाती है ? उसे एक बुरा हादसा समझकर भूल जाना चाहिए । "इदन्नमम" ‡ मैत्रेयी पुष्पा ‡ की मंदाकिनी पर उसका मुंहबोला मामा बलात्कार करता है, तब तत्काल तो वह थोड़ा टूटती है, पर फिर तुरन्त संभल जाती है । इस संदर्भ में डा. अजहर देरीवाला ने लिखा है -- " हिन्दी के बहुत-से मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की नायिकाएं जहां बलात्कार के कारण असाधारण हो जाती हैं वहां मन्दा उस घटना को अपने जीवन का एक अवांछित कोना समझकर झटक देती है । इसमें कुसुमा भाभी का भी सहयोग है । नारी जब तक आर्थिक दृष्टि से परनिर्भर और भावनात्मक सत्ता में लीन रहेगी तब तक उसका शोषण जारी रहेगा । अतः मन्दा इन दोनों से निजात पा लेती है ।" 90 यहां पुनः एक बार राजेन्द्र यादव [91] तथा प्रभा खेतान[92] की इस बात को मानने में कोई हर्ज नहीं दिखता कि जहां नगरों की उच्चवर्गीय सम्भ्रान्त महिलाएं एक सिरे से लदड़ और परंपराओं की सलीब ढोने वाली हैं, वहां ग्रामीण जीवन की निम्नजातीय और निम्नवर्गीय स्त्रियों में परिस्थितियों से लड़ने की और जीवन से जूझने की एक अदम्य जिजीविषा मिलती है । अतः आवश्यकता है इस अपराध-बोध और हीनता-बोध से उबरने की ।

/8/ वैधानिक या कानूनी समस्याएं :

वेश्याओं के संदर्भ में कानून बिलकुल सीधे और सरल होने चाहिए । हमारे कानून में अलग-अलग क्लाज के इतने छिद्र होते हैं कि कई अपराधी कई बार छूट जाते हैं । दूसरे कानून बनाने वाले कभी वैकल्पिक व्यवस्था का विचार नहीं करते हैं । उदाहरणतया बाल-मजदूरी का कानून तो पारित हुआ परन्तु उन बच्चों को रोटी और शिक्षा देने की कोई व्यवस्था नहीं है । हमारे देश में इतनी भीषण दरिद्रता है कि कई गरीब परिवार के बच्चे यदि ____ काम न करें तो उनको

खाना तक न नसीब हों । तो वे क्या करें होटलों के डस्ट-बिनों से दाने ढूंढकर खाएं, चोरी करें, जेब काटें, क्या करें ? उसी प्रकार वेश्यावृत्ति दूर करने के कायदे बनाएंगे पर उसकी कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं बनाएंगे । दहेज देना और लेना पाप है, अपराध है, तो लोगों ने कई नये तरीकों को इजाद किया । जहां शादियों पर लाखों-करोड़ों खर्च होते हैं, क्या सरकार को नहीं दिखता है ? बल्कि सरकार के अनेक मिनिस्टर्स तक उनमें शामिल होते हैं । आज अगर दहेज-प्रथा तदन्तर बन्द हो जाए तो बहुत-सी लड़कियां वेश्या बनने से बच सकती हैं । वेश्या को पकड़ने के बदले वेश्या बनाने वालों को पकड़ा जाए तो भी कुछ सुधार हो सकता है ।

कानूनी रूप से संविधान यह कहता है कि अठारह वर्ष की उमर होने पर अपने जीवन-निर्वाह के लिए आप कोई भी प्रोफेशन अपना सकते हैं । वेश्यावृत्ति भी । पर खुली वेश्यावृत्ति, चकला चलाना, सड़क पर खड़े रहकर ग्राहकों को आमंत्रित करना गैर-कानूनी है ; यदि वह इलाका किसी सार्वजनिक इलाके के 200 मीटर के अन्तर्गत पड़ता हो । इस परिभाषा के अनुसार सोनागाछी, बहुबाजार, कालीघाट आदि सभी इलाके कानून की चपेट में आ जाते हैं, क्योंकि सभी सार्वजनिक स्थल के अन्तर्गत पड़ते हैं । इसीके चलते पुलिस जब-तब सेक्शन 290 के अधीन किसी भी रास्ते में खड़ी वेश्या को व्यभिचार फैलाने के आरोप में या ग्राहकों के साथ मारा-मारी करने के आरोप में पकड़कर ले जाती हैं और दिन-भर बैठाकर वेश्या की हैसियत के अनुसार साठ-सत्तर रूपये लेकर छोड़ देती है ।[93] इस प्रकार कानून की धाराएं भी पुलिस के लिए पैसे कमाने का एक साधन बन गया है । गुजरात में शराबबन्दी है, पर गुजरात में शायद सबसे ज्यादा, और सबसे खराब शराब पी जाती है ।

"सलाम आखिरी" उपन्यास की इन्द्राणी दी "संलाप" नामक संस्था चलाती हैं । कानून के हुलमुलपन पर सुकीर्ति से बात करती हैं :

दो-तीन बार ऐसा हुआ था कि जिस समय छापा मारा गया ××× चकले की मैडम भाग खड़ी हुई । नाबालिग लड़कियों को पुलिस कस्टडी में से रिमांड होम भेज दिया गया । बाद में चकले की मालकिन स्वयं ही बच्चियों की आंटी की तरह स्वयं को पेश कर उन्हें छुड़ा लायी । एक-दो नहीं ऐसे कई केस मैं देख चुकी हूं । सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि कोर्ट यह भी नहीं देखता कि चकले में पकड़ी गई लड़की उसकी बेटी भी थी तो कोर्ट में कम से कम उसे नाबालिग वेश्यावृत्ति के अपराध में दंडित करना चाहिए , भले ही उस पर लड़की बेचने का आरोप न साबित होता हो । कुछ कानून का ढुलमुलापन , कुछ कानून का तथ्य-सापेक्ष न होकर प्रमाण-सापेक्ष होना ... ऐसे में अन्ततः जीत जाना तो तभी सम्भव हो ना जब पुलिस और साक्षी भरपूर सहयोग दें । पर आज जैसी हालत है , उसमें इस जंग को जारी रखना तो स्वयं को गला-गला कर रख देना है । पर भगवान बचाए उन हालातों से जब वेश्या और पुलिस , आई.जी. और बाईजी दोनों ही मर्द और घरवाली की तरह मिले-जुले रहते हैं । और पुलिस ऐसे ××× मामलों में एफ.आई.आर. तक दर्ज नहीं करती है । ... एक बात निरापद रूप से सही है कि और वह यह कि इस देश में न्याय पाना ब्रह्म को पाने से भी ज्यादा मुश्किल है । पुलिस , थाना , न्यायालय , साले सबके सब बड़े-बड़े मार्केट काम्पलेक्स हैं ।" 94

अभी हाल ही में गुजरात के राजकोट में पूजा चौहान नामक एक विवाहिता स्त्री को एफ.आई.आर" दर्ज करवाने के लिए पूरे राजकोट शहर में अण्डर-गार्मेण्स के साथ दौड़ लगानी पड़ी । तब जाकर कहीं उनके कानों पर जू रेंगी । दिनांक 29-7-07 के "टाइम्स आफ इण्डिया " में सुनिता और काजल नामक दो स्त्रियों को एफ.आई.आर. दर्ज करवाने के लिए अपने गांव से भागकर किसी समाजसेवी संस्था की सहायता लेनी पड़ी । आश्चर्य की बात यह है कि ये दोनों एक ही युवक की पत्नी हैं और दोनों को पुत्र नहीं

दे पाने के कारण उनका पति तथा ससुराल वाले अमानुषी त्रास दे रहे थे, जैसे पुत्र देना उनके हाथ में हो । आज सुनिता ने यह भी फरियाद की है उसके पति को हत्यारा करार देना चाहिए क्योंकि उसने उसके गर्भ के तीन-चार "फिमेल-फोइटस" को जबर्दस्ती गिरवा दिया है ।[95] अभिप्राय यह कि वेश्या-उन्मूलन के लिए कायदे बनाने से पहले उनके विस्थापन की समस्या पर विचार करना चाहिए, उनको शिक्षा-दीक्षा देकर रोजी-रोटी देनी चाहिए और फिर ऐसे ठोस छिद्रविहीन कायदे बनाने चाहिए कि किसी स्त्री को वेश्या बनाने से पूर्व अपराधी सौ बार सोचे ।

निष्कर्ष :
=======

अध्याय के समग्रावलोकन के उपरान्त विश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा हम निम्नलिखित निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं :

§1§ अध्याय तीन में लगभग सत्रह तथा अध्याय चार में लगभग उन्नीस उपन्यासों में वेश्या-जीवन का आकलन किसी-न-किसी रूप में हुआ है । चतुर्थ अध्याय के अन्त में अन्य उपन्यासों के अंतर्गत लगभग पचीस-तीस उपन्यासों की संक्षेप में चर्चा की गई है । ये सब इस प्रकार के उपन्यास हैं जिनमें वेश्या-जीवन के किसी-न-किसी आयाम या पक्ष को लेखक या लेखिका ने उभारा है ।

§2§ प्रस्तुत अध्याय को हमने दो विभागों में रखा है । §क§ के अंतर्गत आलोच्य उपन्यासों के आधार पर वेश्याओं की विभिन्न कोटियों एवं प्रकारों पर सोदाहरण प्रकाश डाला है, तो §ख§ के अंतर्गत उन उपन्यासों के आधार पर ही वेश्या-जीवन की प्रमुख समस्याओं पर विचार-विमर्श किया गया है ।

§3§ वेश्याओं की विभिन्न कोटियों को प्रथमतः पाँच आधारों पर विभक्त किया गया है— §स§ शास्त्रीय आधार पर

§क§ वेश्याओं की कोटियां, §ख§ परिवेश पर आधारित वेश्याओं की कोटियां, §ग§ लालबत्ती विस्तार की वेश्याएं, §घ§ हाई-फाय सोसायटी की वेश्याएं, §च§ धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याएं।

§3§ शास्त्रीय आधार पर वेश्याओं की लगभग पन्द्रह कोटियां निर्धारित हुई हैं। यहां शास्त्रीय से हमारा तात्पर्य समाज-शास्त्र आदि का रहा है। ये कोटियां इस प्रकार हैं —1. प्रकट-समूह की वेश्याएं, 2. अप्रकट समूह की वेश्याएं, 3. काल-गर्ल्स, 4. होटल वेश्याएं, 5. रखैल वेश्याएं, 6. वंशानुगत वेश्याएं, 7. वासना-पीड़ित वेश्याएं, 8. परिस्थितिजन्य वेश्याएं, 9. अपराधी एवं पिछड़ी विचरणशील जनजातियों की वेश्याएं, 10. धार्मिक वेश्याएं, 11. पुरुष वेश्याएं, 12. बार-गर्ल्स वेश्याएं, 13. मसाज वेश्याएं, 14. प्रच्छन्न वेश्याएं और गौनहारिन वेश्याएं।

§4§ परिवेश पर आधारित वेश्याओं में ग्रामीण परिवेश की वेश्याएं और नगरीय परिवेश की वेश्याएं समाविष्ट होती हैं। ग्रामीण परिवेश की वेश्याएं ऊपर निर्दिष्ट अप्रकट-समूह की वेश्याओं में आती हैं, जब कि नगरीय परिवेश में दोनों समेह की वेश्याएं होती हैं। परिवेश पर आधारित वेश्याओं में ऐतिहासिक और पौराणिक ऐसे दो वर्ग भी किए जा सकते हैं।

§5§ लालबत्ती विस्तार की वेश्याओं को लगभग छः प्रकारों में आबंटित किया गया है —1. झोंपड़पट्टी की वेश्याएं, 2. लाइन-वालियाँ, 3. कमरेवालियां, 4. अधिया-सिस्टम पर चलने वाली वेश्याएं, 5. फ्लाइंग वेश्याएं और 6. कोठेवालियां।

§6§ हाई-फाई सोसायटी की वेश्याओं को पुनः पांच कोटियों में विभक्त किया गया है — 1. नृत्यांगना या तवायफ प्रकार की वेश्याएं, 2. कुलीन धनाढ्य घरानों की वेश्याएं, 3. कालगर्ल प्रकार की वेश्याएं, 4. मोडलिंग और फिल्म-क्षेत्र की

वेश्याएं. 5. सिंगापोर की मसाज वेश्याएं आदि-आदि ।

§7§ धार्मिक [illegible] क्षेत्र की वेश्याओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है --1. देवदासियां, 2. मधुआइनें तथा 3. धर्मानुयायी संपन्न-कुलीन महिलाएं । राजनीतिक क्षेत्र की वेश्याओं को भी तीन वर्गों में रखा गया है -- 1. राजनीतिक लोगों से जुड़ी हुई महिलाएं, 2. राजनीति के लिए प्रयुक्त महिलाएं तथा राजनीतिक पार्टियों से जुड़ी हुई महिलाएं ।

§8§ वेश्या-जीवन से जुड़ी हुई समस्याओं को हम निम्नलिखित आठ विभागों में रख सकते हैं -- 1. आर्थिक समस्याएं, 2. पारिवारिक समस्याएं, 3. सामाजिक समस्याएं, 4. [illegible] शारीरिक समस्याएं, 5. काम-कुण्ठा-जनित समस्याएं, 6. शैक्षिक समस्याएं, 7. मनोवैज्ञानिक समस्याएं, 8. वैधानिक या कानूनी समस्याएं । ये समस्याएं परस्पर अनुस्यूत हैं । अनेक समस्याओं की कड़ियां परस्पर जुड़ी हुई रहती हैं ।

====== XXXXX ========

: सन्दर्भानुक्रम :

§1§ सलाम आखिरी : मधु कांकरियां : पृ. 87 ।

§2§ द्रष्टव्य : मेरी तैंतीस कहानियां : शैलेश मटियानी : पृ. 75 ।

§3§ सलाम आखिरी : पृ. 87 ।

305

§4§ द्रष्टव्य : नदी फिर बह चली : हिमांशु हिमांशु श्रीवास्तव : पृ. 304-

§5§ द्रष्टव्य : " महाराव लखपतसिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व :
डा. के.एम. शाह ।

§6§ अवसर : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. 260 ।

§7§ द्रष्टव्य : यही प्रबंध : पृ. 176 ।

§8§ से §10§ : द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 99, 157, 184 ।

§11§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : पृ. 261 ।

§12§ मित्रो मरजानी : कृष्णा सोबती : पृ. 84 ।

§13§ फालिन विमेन : डा. विद्याधर अग्निहोत्री : पृ. 8 ।

§14§ मुरदाघर : जगदम्बाप्रसाद दीक्षित : पृ. 53 ।

§15§ द्रष्टव्य : सलाम आखिरी : पृ. 33, 38, 65, 98 ।

§16§ द्रष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध : पृ. 273 ।

§17§ कांचघर : डा. रामकुमार भ्रमर : पृ. 77 ।

§18§ दलित चेतना से अनुप्राणित हिन्दी उपन्यास : डा. एन.एस.
परमार : पृ. 67 ।

§19§ इमरतिया : नागार्जुन : पृ. 115 ।

§20§ एक मूठ सरसों : शैलेश मटियानी : पृ. 90-91 ।

§21§ और §22§ सलाम आखिरी : पृ. 135 , 135 ।

§23§ आधा गांव : डा. राही मासूम रज़ा : पृ. 248 ।

§24§ " हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी
उपन्यास : डा. पारूकान्त देसाई : पृ. 207 ।

§25§ शहर में घूमता आईना : उपेन्द्रनाथ अश्क : पृ. 72 ।

§26§ वही : पृ. 153 ।

§27§ और §28§ सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 118, 106 ।

(29) धरती धन न अपना : जगदीशचन्द्र : पृ. 157 ।

(30) त्यागपत्र : जैनेन्द्र : पृ. 81 ।

(31) सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. 123-128 ।

(32) मुरदाघर : ×× जगदम्बाप्रसाद दीक्षित : पृ. 10 ।

(33) से (36) सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 30, 101, 190, 22 ।

(37) वही : पृ. 66, 67, 107, 146, 164, 184 ।

(38) से (41) : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 66-67, 29, 20, 113 ।

(42) चम्पाकली : ऋषभचरण जैन : पृ. 11? ।

(43) " हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. 266 ।

(44) नदी फिर बह चली : हिमांशु श्रीवास्तव : पृ. पृ. 304-305 ।

(45) द्रष्टव्य : एक चूहे की मौत : बदी उज्जमाँ : पृ. पृ. 99 ।

(46) प्रश्न और मरीचिका : भगवतीचरण वर्मा : पृ. 218-219 ।

(47) छाया मत छूना मन : हिमांशु जोशी : पृ. पृ. 7 ।

(48) दिल एक सादा कागज : डा. राही मासूम रज़ा : पृ. 63 ।

(49) सलाम आखिरी : पृ. 121-122 ।

(50) किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई : शैलेश मटियानी : पृ. 30 ।

(51) सलाम आखिरी : पृ. 124 ।

(52) द्रष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध : पृ. 297-308 । 185

(53) से (57) : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 21, 27, 184, 184, *8* ।

(58) से (60) : मुरदाघर : पृ. क्रमशः 146-147, 143, 25 ।

(61) से (63) सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 27, 69, 191 ।

(64) द्रष्टव्य : अवसान : मन्मथनाथ गुप्त : पृ. 179 ।

(65) से (68) : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 27-31, 92, 92, 41 ।

(69) देसाई साहब की काव्य-डायरी से ।

(70) से (77) : सलाम आखिरी : पृ. क्रमशः 184, 157, 187, 190, 188, 157, 191, 191 ।

(78) प्रेत और छाया : इलाचन्द्र जोशी : पृ. 330 ।

§79§ द्रष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध : पृ. 200-201 ।

§80§ पर्दे की रानी : इलाचन्द्र जोशी : पृ. 128 ।

§81§ घरौंदे : डा. रांगेय राघव : पृ. 293 ।

§82§ से §89§ : सलाम आखिरी : मधु कांकरिया : पृ. क्रमशः 75, 77, 97, 69, 85, 85, 85, 101 ।

§90§ आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण : डा. अज़हर ढेरीवाला : पृ. 99 ।

§91§ द्रष्टव्यx द्रष्टव्य : औरत होने की सजा : अरविंद जैन : भूमिका से ।

§92§ हंस : जून-जुलाई : 1994 ई. ।

§93§ सलाम आखिरी : पृ. 80 ।

§94§ वही : पृ. 93 ।

§95§ टाइम्स आफ इण्डिया : 29-7-07 ।

======= xxxxxxxxx ==========